'अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी प्रश्न'

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

पूजा पांडू भंडारी

अनुक्रमांक:220P0140006

PR Number: 201809233

मार्गदर्शक

ममता दीपक वर्लेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक:
ममता दीपक वेर्लेकर

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी प्रश्न" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of "Ms. Mamata Verlekar" and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Bhandari

Pooja Pandu Bhandari

220P0140006

Date:27/4/2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी प्रश्न" is a bonafide work carried out by Ms Pooja Pandu Bhandari under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Ms. Mamata Deepak Verlekar

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

School Stamp

Date:27/04/2024

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Declaration	ii
	Completion certificate	iii
	अनुक्रम	iv–vii
	कृतज्ञता	viii
1 प्रस्तावना	1.1प्रस्तावना 1.2शोध समस्या 1.3प्रस्तावित अनुसंधान की प्रासंगिकता और आवश्यकता 1.4प्रस्तावित शोध के उद्देश्य 1.5साहित्यिक पुनर्विलोकन 1.6प्रस्तवित अनुसंधान के लिए अनुसंधान पद्धत्ति 1.7अध्यार्याकरण 1.8निष्कर्ष 1.9संदर्भ सूची	1-20

2 अनुज लुगुन :सामान्य परिचय	2.1अनुज लुगुन :व्यक्तित्व 2.2परिवेश 2.3कृतित्व 2.3.1 लंबी कविता 2.3.1.1 बाघ और सुगना मुंडा की बेटी 2.3.2 काव्य संग्रह 2.3.2.1 पत्थलगड़ी 2.3.2.2 अघोषित उलगुलान 2.3.3 संपादित पुस्तकें 2.3.4 स्तंभ लेखन 2.4काव्यदृष्टि 2.5पुरस्कार 2.6निष्कर्ष 2.7संदर्भ सूची	21-31
3 आदिवासी:समाज एवं साहित्य	3.1आदिवासी परिभाषाएँ 3.2आदिवासी समाज 3.2आदिवासी :परिभाषा 3.3 आदिवासी जीवनशैली 3.4 भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए स्थान	32-51

	4.15 मजदूर 4.16शिक्षा 4.17 गरीबी 4.18 निष्कर्ष 4.19 संदर्भ सूची	
5 निष्कर्ष	निष्कर्ष	90-100
	प्रपत्र प्रस्तुतिकरण तथा प्रकाशन	101-102
	संदर्भ सूची	103-112

कृतज्ञता

मुझे पद्य में रुचि पहले से ही थी ।परंतु इसके बावजूद आदिवासी कविता पर शोध करना ही मेरे विचारो से परे था। कोई भी कार्य करने के लिए मार्गदर्शन अत्यंत ज़रूरी है ।इसी तरह का मार्गदर्शन मुझे इस शोध कार्य की मार्गदर्शक सहायक प्राध्यापक 'ममता दीपक वर्लेकर' जी से मिला । उन्होंने शोध के हर कदम पर हमे सटीक मार्गदर्शन दिया ।उसी के साथ शोध के दौरान जो समस्याएँ आयी उन्हे हल करने में बहुत मदत की। साथ ही साथ आदिवासियों पर आधारित कई समीक्षात्मक पुस्तके भी उपलब्ध कराई। गोवा विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों का मैं आभार व्यक्त करती हुँ जिन्होंने इस शोधकार्य में मेरी बहुत सहायता की।मैं खास तौर पर कवि अनुज लुगुन का आभार मानती हूँ।मेरी माँ श्रीमती रतन भंडारी ,श्री.पिताजी पांडू भंडारी , बहन कुमारी आरती भंडारी और श्रीमती संजना गावड़े का मुख्य रूप से धन्यवाद करना चाहूँगी। अध्ययन के दौरान उनके द्वारा दिए गए अनमोल प्रोत्साहन तथा मदत के बिना यह शोध कार्य पूरा नहीं हो सकता था। गोवा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय तथा केंद्रीय पुस्तकालय – पणजी के कर्मचारियों के सहयोग के बिना यह शोध कार्य संभव नहीं था।उसी के साथ मेरे सभी मित्रो का आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अध्ययन कार्य के दौरान बहुत मदत की।प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जिसने भी मेरे लघु शोध-प्रबंध में सहायता प्रदान की है, मैं उन सबके प्रति अपना आभार ज्ञापित करती हूँ।

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१–८६६९६०९०४८

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

(Accredited by NAAC)

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/274

Date: 10/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Pooja Bhandari, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 33 Hours & 20 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Ms. Mamata Verlekar .

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Mr. Nandkishor K. Bandekar
Asst. Librarian
Goa University Library
Taleigao Goa

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

VISITS TO THE GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR.NO.	DATE	TIME	HOURS
1.	26/6/2023	2:35-5:08	2 hr 43 min
2.	4/07/2023	10:15-10:20	5min
3.	5/07/23	12:00-12:30	30 min
4.	14/07/2023	1:50-2:41	51 min
5.	18/07/2023	2:00-3:30	1 hr 30 min
6.	01/08/2023	9:45-10:05	1 hr 20 min
7.	03/08/2023	10:45-10:50	5 min
8.	09/08/2023	1:50-1:55	5 min
9.	09/08/2023	1:56-2:30	34 min
10.	14/08/2023	11:26-12:29	1hr 3 min
11.	17/08/2023	9:50-10:00	10 min
12.	9/09/23	10:50-1:00	2 hr 10 min
13.	7/09/23	9:45-9:50	5 min
14.	4/10/23	3:26-4:00	34 min
15.	5/10/23	11:08-3:05	4 hr 3 min
16.	5/10/23	3:25-4:30	5 min
17.	6/10/23	10:45-11:02	17 min
18.	7/10/23	10:25-11:8	33min
19.	10/10/23	10:52-1:10	2 hr 18 min
20.	14/10/23	11:00-2:00	3 hr
21.	30/10/23	2:45-2:50	5 min
22.	13/11/2023	1:30-1:35	5 min
23.	17/11/2023	1:35-2:30	1 hr 5 min
24.	7/12/2023	2:45-2:55	5 min
25.	8/01/2024	10:35-1:50	3hr 15min
26.	10/01/2024	11:50-12:30	1 hr 20 min
27.	23/01/2024	12:15-1:05	1 hr 10 min
28.	25/01/2024	1:57-1:58	1 min
29.	06/02/2024	12:45-12:50	5min
30.	20/02/2024	11:45-1:40	2hr5 min
31.	24/04/2024	10:40-11:43	1hr 3min
	TOTAL HOURS		**33 hr 20 min**

Signature of the Guide
Asst. Prof. Ms. Mamata Verlekar

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Student
Miss Pooja Bhandari

9

प्रथम अध्याय:

प्रस्तावना

10

1)प्रस्तावना

1.1)प्रस्तावना

काव्य के प्रति मेरी रुचि पहले से ही रही है। काव्य एक ऐसा माध्यम है जिसमें, कम शब्दों में हम अपनी बात सुन्दर तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं। मुझे समकालीन कवि तथा उनकी कविताओं में अधिक रुचि है। इसका मूल कारण यह है कि समकालीन परिवेश तथा समस्याओं को इन कविताओं के माध्यम से गहराई से समझा जा सकता है। तत्कालीन समस्याओं के बारे में जानने के लिए समाज की समस्याओं तथा मनोवृत्तियों के बारे में जानना ज़रूरी है। साहित्य इसका एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसी की वजह से मैंने इस शोधकार्य के लिए समकालीन कवि की कविताओं का चयन किया है। बचपन से विविध विषयों पर पढ़ती आई हूँ । अनेक विषयों पर कविताएँ लिखती आई हूँ। विषय जैसे– स्त्री, असमानता, मनोवैज्ञानिक कविताएँ, प्रकृतिपरक कविताएँ, धर्म , सम्प्रदाय ,युद्ध, प्रेम, मानवीय मूल्य, पारिवारिक संबंध, पारिवारिक विघटन, भूमंडलीकरण इत्यादि। आदिवासी साहित्य पढ़ने के उपरांत शिक्षकों से विचार–विमर्श करने पर यह जाना कि ,आदिवासी समाज अपनी संस्कृति, अस्तित्व तथा पर्यावरण की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हम भी उसी ज़मीन पर रहते है। एक ही ज़मीन पर रहकर आदिवासियों को निम्न स्थान दिया गया है। इसीलिए मुझे लगा कि इस विषय को गहन स्तर पर जानना, उनके प्रश्नों को समझना तथा उनका समाधान खोजने का प्रयास करना अत्यावश्यक है। इस शोध कार्य के दौरान कई नई बातें पता चलीं।

एक आदर्श कवि में समाज तथा उसके अंतर्मन में चलने वाले विचारों की अभिव्यक्ति करने की एक खास कला होती है। जिसने पीड़ा को भोगा है, संघर्ष किया है, वे सही मायने में समस्या को समझ सकते हैं। इक्कीसवीं सदी के प्रमुख आदिवासी कवियों में से एक अनुज लुगुन है।उनके काव्य संग्रह चुनने का यही कारण है। उनकी कविताओं में उनकी आपबीती तथा समाज का यथार्थ नज़र आता है। उन्होंने अपनी कविताओं में समस्याओं का समाधान भी खोजने की कोशिश की है। कवि अनुज लुगुन झारखंड के निवासी है। वे अपने समाज के इतिहास पर बात करते हैं। वे आज भी संघर्ष कर रहे हैं। उसी के साथ इतिहास लेखन पर प्रश्न भी उठाते हैं। आदिवासीयों के प्रश्नों को आदिवासी दृष्टि से ही समझना ज़रूरी हैं। आदिवासी साहित्य पर इससे पहले अनेक कार्य किए जा चुके हैं। परंतु अनुज लुगुन की कविताओं पर काम नहीं किया गया है।

1.2)शोध समस्या

इस शोध कार्य में निम्नलिखित शोध समस्याओं पर विचार किया जाएगा। अनुज लुगुन के काव्य में आदिवासियों की कौनसी समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। काव्यगत दृष्टि से कवि इन समस्याओं को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?इन प्रश्नों पर विचार किया गया है।

1.3)प्रस्तावित अनुसंधान की प्रासंगिकता और आवश्यकता

आदिवासी समाज अपनी अस्मिता तथा पारंपरिक ज्ञान संपदा बचाने की बहुत कोशिश कर रहे हैं ।आदिवासियों को दोयम दर्जा दिया जाता है ,जिसकी वजह से उन्हें अनगिनत

समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसका असर भी आदिवासियों के जीवनशैली पर प्रखर रूप से पड़ता है। उन्ही को अक्सर सामाजिक, आर्थिक असमानताओं और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सरकार ने इनके लिए शिक्षा और स्वास्थ्य, कार्यक्रम, भूमि अधिकार और कौशल विकास सहित विभिन्न पहलू लागू किए हैं। इसके लिए कई गैर सरकारी संगठन जैसे जनजातीय विकास केंद्र (उड़ीसा), समाज की शिक्षा और कल्याण के लिए स्वैच्छिक एकीकरण (उड़ीसा), दिलासा संस्था (महाराष्ट्र), एशियाटिक चैरिटेबल ट्रस्ट इत्यादि अपने स्तर पर प्रयास कर रहे हैं। आदिवासी समस्या यह वैश्विक समस्या है। इसको समझना बहुत ज़रूरी हैं।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। आदिवासियों के अस्तित्व की लड़ाई की गुहार भी साहित्य ने सुन ली है। तभी साहित्य में आदिवासी विमर्श उभर कर आया है। आदिवासी समाज का फैलाव दुनिया भर में होने के कारण, यह विषय एक प्रदेश तक सीमित नहीं रहा है । विश्व स्तर पर कई साहित्यकार अपनी ओर से योगदान दे रहे हैं। इसमें आदिवासी तथा गैर आदिवासी भी सम्मिलित हैं। आदिवासियों की समस्या सामने लाने में साहित्य ने अपना बड़ा योगदान दिया है। इसमें प्रमुख रूप से सुशीला सामत, रामदयाल मुंडा, वंदना टेटे, अनुज लुगुन, जसिंता केरकेट्टा, मैपती कुमार, इत्यादि रचनाकारों ने अपना योगदान दिया है। साहित्य अपना बहुमूल्य योगदान देता है। इस शोधकार्य से भविष्य के आलोचकों तथा शोधकर्ताओं को अनुज लुगुन के काव्य पर आलोचनात्मक सामग्री उपलब्ध हो सकती है,क्योंकि उन पर ज्यादा शोध कार्य नहीं हुआ है और उनके रचना संसार पर कम आलोचनात्मक सामग्री उपलब्ध है। इससे आदिवासी के कई पहलुओं के बारे में जानने में ,उनके प्रश्नों को समझने तथा समाधान खोजने में मदत हो सकती है। यह विषय प्रासंगिक है और हमेशा प्रासंगिक रहेगा ।

1.4)प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

- आदिवासी जीवन, समाज तथा साहित्य को समझना।
- अनुज लुगुन के काव्य का अध्ययन करना।
- अनुज लुगुन की काव्य दृष्टि को समझकर काव्य में चित्रित आदिवासी प्रश्नों को विश्लेषित करना।

1.5)साहित्यिक पुनर्विलोकन

भारत अनेक धर्म-पंथ, भाषा तथा संस्कृतियों का भंडार है। वर्ण व्यवस्था भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही है। आर्यों का भारत आगमन, आर्य–अनार्य के मध्य चला दीर्घकालीन संघर्ष, अनार्य आदिवासियों का आर्यों द्वारा किया गया क्रूर संहार ,आदि आदिवासियों का इतिहास बहुत बड़ा है परंतु उसे सही तरह से लिपिबद्ध किया नहीं गया। दैत्य, पिशाच, राक्षस, असुर ऐसे अनेक शब्दों में आदिवासियों के अस्तित्व की चर्चा रामायण-महाभारत तथा वैदिक साहित्य आदि ग्रंथों में की गई है। आदिवासियों का अपनी मातृभूमि की रक्षा में बहुत बड़ा योगदान रहा है।ब्रिटिशों के शासन के विरुद्ध बहुत बड़ा विद्रोह करके मातृभूमि को मुक्त करने के लिए स्वतंत्रता की यज्ञवेदी पर जिन्होंने अपनी बली चढ़ाई उसमें बाबूराव सेडमाके, बिरसा मुंडा, सीदो-कान्हू संथाल, तंट्या भिल्ल, उमेड़ वसावा, शंकर शहा, रघुनाथ आदि सभी वीर आदिवासी थे।गोंडवन में गोंडी साम्राज्य की नींव रखनेवाला महान

पराक्रमी गोंड राजा कोलभिल्ल तथा उनका पुत्र भीम बल्लालशहा, अपनी वीरता से बावनगढ़ हथिया कर, अंत तक उसे अपने अधीन रखने वाला, वह पराक्रमी गोंड राजा संग्रामसिंह और मातृभूमि के रक्षा के लिए मुगल सेना से जी-जान से लड़ने वाली तथा अंत में अपने प्राणों का बलिदान देने वाली महाराणी पीरांगना दुर्गावती जैसे पराक्रमी व्यक्ति भी आदिवासी थे, जिनके राजनीतिक कार्यों की छाप 'गोंडवाना', 'भिलवड' तथा 'कोलवण आदि नामों से पहचाने जाने वाले भू-प्रदेशों पर आज भी बनी हुई है। आज आदिवासी शब्द के उच्चारण से ही हमारे सामने खड़ा हो जाता है- प्रत्येक सदी से छला-सताया गया, मनुष्य अपनी स्वतंत्र परंपरा सहित कई सालों से गाँव-देहातों से दूर घने जंगलों में रहने वाला संदर्भहीन मनुष्य- एक विशेष पर्यावरण में अपने सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को जान की कीमत पर संजो कर रखनेवाला प्रकृतिनिष्ठ तथा प्रकृति निर्भर मनुष्य, मारा-मारा भटकने वाला शिकारी मनुष्य , कभी राजनीतिक तथा सांस्कृतिक वैभव से इतराने वाला यह कर्तव्यशील मनुष्य, परंतु वर्तमान में लाचार, अन्यायग्रस्त तथा पशुवत जीवन-यापन करने वाला हुआ है।अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य समाज वैज्ञानिकों और विचारकों ने 'आदिवासी कौन' इस विषय पर विस्तार से चर्चा करने के उपरांत अपने ग्रंथों में कुछ परिभाषाओं को उद्धृत किया है। इनमें गिलिन और गिलिन, डब्ल्यू.जे. पेरी, डी. रीबर्स, बोगार्डस राल्फ पीडिंग्टन, डी. एन. मजुमदार, डॉ. बी. एच. मेहता, डॉ. गुरुनाव नाडगोंडे और डॉ. जी. एस. धुर्वे आदि अध्येताओं का उल्लेख करना प्रासंगिक है। इन अध्येताओं द्वारा की गई 'आदिवासियों' की परिभाषा अर्थपूर्ण तथा समीचीन है। इसके अलावा इंपीरियल गजेट तथा भारतीय संस्कृति कोश में 'आदिवासी कौन' इस विषय पर चर्चा की गई है।

प्रसिद्ध समाजवैज्ञानिक श्यामाचरण दुबे आदिवासियों के बारे में लिखते हैं- "ऐतिहासिक प्रभावों और आर्थिक-सामाजिक शक्तियों ने देश की अधिकांश जनसंख्या को एक दूसरे के समीप लाकर उनके जीवन के कतिपय पक्षों में बाह्य और सीमित अंशों में आन्तरिक एकरूपता प्रदान की है। भारत की जनसंख्या का एक अल्प भाग इन शक्तियों से अपेक्षाकृत अप्रभावित रहा है। इस भाग के अन्तर्गत अधिकांश भारत के प्राचीनतम निवासियों के वंशजों के छोटे-बड़े समूह आते हैं जो आज भी संस्कृति के आरम्भिक धरातल पर जीवनयापन करते हैं। इन समूहों को 'आदिवासी' अथवा 'जनजाति की संज्ञा दी जाती है।"[1] श्यामाचरण दूबे ही लिखते हैं,"पर-संस्कृतियों से संबंध रखते हुए भी इस धरातल की अधिकांश संस्कृतियों में अपनी विशिष्ट, परम्परागत रूढ़ियों, विश्वासों और जीवन-शैलियों पर चलने का विशेष आग्रह रहता है।"[2]

यू.एन.ओ. ने अपने घोषणा पत्र में आदिवासी राष्ट्र को परिभाषित किया है। इसके अनुसार "आदिवासी राष्ट्र का तात्पर्य उन लोगों के वंशजों से है जो किसी देश की वर्तमान भूमि के पूरे या कुछ भाग पर विश्व के अन्य भागों की किसी भिन्न संस्कृति अथवा नस्ल के लोगों द्वारा पराजित कर दिए जाने या उनके साथ किसी समझौते के तहत या अन्य किसी तरह से वर्चस्वहीन अथवा औपनिवेशिक स्थिति में ढकेल दिए जाने के पहले से ही, वहाँ रह रहे थे।"[3]

भारतीय संविधान ने उन्हें 'अनुसूचित आदिवासी' के रूप में संबोधित किया है। अनुज लुगुन की कविताओं पर रविभूषण का कहना है कि," अनुज लुगुन की कविता 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी समकालीन हिन्दी कविता की एक बड़ी उपलब्धि है। यह मुक्ति की आकांक्षा की एक बड़ी कविता है। इस कविता में इतिहास-लेखन की मुख्यधारा पर, सभ्यता

के विकास पर प्रश्न है | यह मौखिक परम्परा से लिखित परम्परा तक के दीर्घ विस्तार को समेटती है। मुण्डा समाज और आदिवासी समाज के साथ यह उनमें सीमित न रहकर विश्व की एक परिक्रमा करती है । पूँजी और लालसा लिप्सा पर प्रहार करती है, एक नये समय और समाज की रचना का सार्थक प्रयत्न करती है, यथार्थ को उसकी समग्रता में देखकर उसे बदलने की आकांक्षा रखती है ।बाह्य शत्रु के साथ आन्तरिक शत्रु की सही पहचान करती है, एक नये मानक की रचना करती है, संघर्ष के सौन्दर्य का विकास करती है। अतीत की स्मृति, वर्तमान का यथार्थ और भविष्य का स्वप्न और उसकी कल्पना सब एक साथ समग्र रूप में यहाँ मौजूद है।"[4] अनुज लुगुन कहते है कि, "जंगल में उन्होंने जीवन का एक पक्ष बनाया। ऐसा पक्ष जो 'उपनिवेश' पर नहीं 'सहजीवी' होने पर यकीन करता था। "[5] अनुज लुगुन का कहना है कि, "मैं अपने जंगलों, पहाड़ों, दरख्तों और गिलहरियों को देखता हूँ, तो मुझे उनके चेहरे पर कई आमक पहचान चिपकी हुई दिखायी देती है। कई गलत धारणाएँ उनके बारे में प्रचलित हैं। न इतिहास ने उन्हें उनकी वास्तविक पहचान दी और न ही कला या कविता ने। इन सबने 'जंगल को जंगली' होने का जो नकारात्मक अर्थ दिया | मेरी कविता उन सबका प्रत्युत्तर देने के लिए बेचैन रहती है।"[6] अनुज लुगुन की लंबी कविता-'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी के बारे में कहते हुए रविभूषण कहते है कि ,"कविता में आरम्भ से अन्त तक कहीं कोई विखराव नहीं। चिन्तन और विचार के यहाँ कई सूत्र हैं। कवि पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध सहजीवी व्यवस्था का हिमायती है। काव्य-स्वर संयत है। एक युवा कवि का यह संयम उसकी बड़ी विशेषता है। कविता संघर्ष की परम्परा का विस्तार और विकास करती है। यह 'एकध्रुवीय विश्व और 'विश्व ग्राम' का विरोध करती है। कविता में काव्य-सौन्दर्य और नाट्य-सौन्दर्य भी है। संवाद प्रमुख

है। पहली बार कविता में गणतन्त्र को एक सार्थक रूप में देखा गया है। संघर्षशील चेतना का विकास करने वाली यह कविता मुक्ति की आकांक्षा की कविता है। "[7]

'सर्वप्रथम झारखंड के रमना अल्हाड़ी के नेतृत्व में 1766 का पहाड़िया विद्रोह झारखंड की धरती पर ही शुरू हुआ था। फिर तो कतार ही लग गई विद्रोहों की। सशस्त्र संघर्ष का यह सिलसिला 1908 तक चलता रहा। एक से एक बढ़कर योद्धा अंग्रेज़ों से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए पर उन्होंने कभी समर्पण नहीं किया। पहाड़ियों से तंग आए अंग्रेज़ कमिश्नर व अधिकारियों को तो पहाड़िया आदिवासी वीरों की शर्तें मानकर स्वायत्त शासन की छूट देनी पड़ी। तिलका माँझी ने तो एक अंग्रेज़ कमिश्नर क्लीवलैंड, जब वह एक आदिवासी स्त्री से बलात्कार कर रहा था, को तीर से ही मार गिराया था।'[8] भगवान दास पटेल का कहना है कि, "सही अर्थों में संस्कृति के कई स्तर होते हैं, कई परतें होती हैं, इसलिए हम किसी भी संस्कृति को आदिवासी, ग्राम्य या नागरिक संस्कृति नहीं कह सकते। प्रत्येक मनुष्य विभिन्न परिस्थितियों से गुजरता है, चाहे वह कितना ही पढ़ा- लिखा क्यों न हो। इन सारी परिस्थितियों को हमें सही अर्थों में सामने रखकर भारतीय संस्कृति का मूल खोजना चाहिए। आज हमारी सबसे प्रमुख आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति का मूल खोजना।"[9] जवाहर लाल नेहरू ने एक बार कहा था- "समस्याओं का समाधान है ,जनजातीय जीवन के सामंजस्य में व्यवधान डाले बिना उनकी उन्नति के लिए काम करना; जनजातियों पर कुछ थोपे बिना उन्हें भारतीय समाज का सदस्य बनाना और एक अभिन्न हिस्से के रूप में उसे जोड़ना । हम अपने ढंग से जीए इसका स्वागत है लेकिन दूसरों पर क्यों थोपें... मैं बिल्कुल आश्वस्त नहीं हूँ कि जीने का कौन सा रास्ता बेहतर है..... जनजातियों का या हमारा अपना? कुछ मायनों में मैं निश्चित हुँ कि उनका रास्ता बेहतर है इसलिए यह हमारी ओर से घोर अशिष्टता होगी कि हम उनके विरुद्ध

श्रेष्ठता का भाव प्रदर्शित करें, उन्हें कहें कि उन्हें कैसा आचरण करना चाहिए या उन्हें क्या करना चाहिए। हमें उन्हें अपनी दूसरे दर्जे की नकल बनाने की कोशिश करने में कोई तुक नज़र नहीं आती। "[10]

मैनेजर पांडेय का कहना है कि, "असुर शब्द सुनते ही हिन्दी पाठकों की कल्पना में ऐसे लोगों का चित्र उभरता है जो विचित्र, भयानक, मायावी, खूंखार, नरभक्षी और असभ्य हों तथा जिनके नाखून और दाँत बहुत बड़े-बड़े हो। असुरों का यह चित्र भारतीय साहित्य में गढ़ी गयी … तथा धारणाओं की देन है। वैदिक साहित्य से शुरु होकर रामायण, महाभारत और विभिन्न पुराणों में निर्मित असुरों की यह छवि एक ओर उनके समुदाय और जीवन के दानवीकरण , दूसरी ओर उनके जीवन के यथार्थ के मिथकीकरण का परिणाम है। प्रभुत्वशाली सत्ताएँ जिनका विनाश करना चाहती हैं उनका पहले दानवीकरण करती हैं, फिर उन पर हमला करती हैं और बाद में उनकी ज़मीन तथा जीवन पर कब्ज़ा करती हैं। भारत में यह प्रक्रिया वैदिक काल से लेकर आज तक चल रही है। यही प्रक्रिया अमरिका में कोलम्बस के समय से जार्ज बुश के समय तक, अमेरिका के मूल निवासी रेड इंडियन से आरम्भ होकर सद्दाम हुसैन तक चलती दिखायी देती ।"[11] मुंडा समुदाय की सुशीला सामद (सामन्त)(7 जून 1906–10दिसंबर1960)हिन्दी साहित्य में पहली आदिवासी कवयित्री हैं। तीस के दशक में वे हिन्दी में कविताएँ लिखती थीं "आदिवासी लेखन की उभरती चेतना का सबसे सटीक और सही चित्रण हमें वाहरू सोनवणे की 'स्टेज' नाम की कविता से पता चलता है । इस कविता में आदिवासी कवि ने अपने उस अहसास को विहित किया है।...यह कविता आदिवासी लेखन में उभर रही चेतना को परिभाषित और उस लेखन की ज़रूरत को रेखांकित करती है।"[12] आदिवासी विमर्श बहुत पुराना विषय है।

"हमें आदिवासियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण रखना चाहिए। हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं, विशेषकर सीमान्त क्षेत्रों में, और उनसे सीखकर हमें उनकी सहायता करनी और उनको सहयोग देना चाहिए। वे लोग अत्यन्त अनुशासित होते हैं, कभी-कभी तो भारत के अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक लोकतन्त्री। यद्यपि उनका कोई संविधान नहीं है, फिर भी वे बहुत अधिक लोकतन्त्री ढंग से रहते और अपने बड़े लोगों या प्रतिनिधियों के निर्णयों को व्यवहार में लाते हैं। खास बात तो यह है कि वे लोग नाचते-गाते और जीवन का आनन्द भोगने का प्रयास करते हैं। वे उन लोगों की तरह नहीं हैं जो स्टाक एक्सचेंजों में बैठकर शोरगुल करते हैं और अपने को सभ्य मानते हैं।...हमें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होगा। हमारे लिए आवश्यक यह है कि हम उनके साथ अपनेपन का अनुभव करें और उन्हें अधिक से अधिक समझने का प्रयास किया जाए। इसके लिए एक मनोवैज्ञानिक ढंग से सोचने की आवश्यकता है।"[13]

1.6)प्रस्तवित अनुसंधान के लिए अनुसंधान पद्धति

इस शोध कार्य के लिए अनुज लुगुन द्वारा लिखित लंबी कविता की पुस्तक,' बाघ और सुगना मुंडा की बेटी (2017 ई. वी.), दो काव्य संग्रह–'पत्थलगड़ी' (2021 ई. वी.), 'अघोषित उलगुलान' (2023 ई. वी.) का आधार लेकर इन काव्य संग्रहों का पाठ विश्लेषण किया गया है। अंतरजाल पर उपलब्ध कई आलेखों तथा वीडियो रूप में उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री का आधार भी लिया गया है।साथ ही कवि अनुज लुगुन द्वारा प्रकाशित कुछ शोध आलेखों

का अध्यन किया गया है।पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों की भी सहायता ली गई हैं।विश्व स्वास्थ्य संगठन ,आदि की रपटों की सहायता ली गई है।

1.7)अध्यायीकरण

यह शोध प्रबंध कुल पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।प्रथम अध्याय में शोध कार्य की 'प्रस्तावना' है।इसमें सम्पूर्ण शोध कार्य का परिचय में दिया गया है।द्वितीय अध्याय का शीर्षक 'अनुज लुगुन: सामान्य परिचय' है।इसके अंतर्गत कवि अनुज लुगुन के रचना संसार,शिक्षा,कार्य,नौकरी,पुरस्कार,काव्य दृष्टि, विचार,काव्यागत विशेषताएँ, इत्यादि के बारे में सामान्य जानकारी दी गई है।तृतीय अध्याय का शीर्षक 'आदिवासी :समाज साहित्य' है।इसमें आदिवासी शब्द का अर्थ एवं स्वरूप, आदिवासी शब्द की परिभाषा,आदिवासियों की जीवन शैली, आदिवासी साहित्य लेखन की पृष्ठ भूमि,आदिवासियों के लिए भारतीय संविधान तथा आदिवासियों को विश्व स्तर पर दिया गया स्थान ,इत्यादि विषयों पर लेखन कार्य किया गया है।चतुर्थ अध्याय का शीर्षक 'अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी प्रश्न' है।इस अध्याय के अंतर्गत अनुज लुगुन की कविताओं में चित्रित कई आदिवासी प्रश्नों का विश्लेषण किया गया है,जिसमे प्रमुख रूप से नागरिकता,अस्तिव,अस्मिता,संस्कृति,पर्यावरण,मानवीयमूल्य,नक्सलवाद,असमानता,

भाषिक,राजनीतिक,विस्थापन ,इत्यादि हैं।इनका पाठ विश्लेषण किया गया है।पंचम अध्याय का शीर्षक 'निष्कर्श' है।इसमें शोध के निष्कर्ष तथा प्रमुख उपलब्धियाँ प्रस्तुत की गई हैं।साथ ही शोध की संभावनाओं पर विचार किया गया है।

1.8)निष्कर्ष

काव्य एक ऐसा माध्यम है जिससे अंतर्मन तथा समाज में घट रही घटनाओं के बारे में अभिव्यक्त कर सकते हैं। समाज में कई समस्याएँ हैं जैसे स्त्री शोषण, भेदभाव ,प्रदूषण, आदिवासी समस्याएँ,राजनैतिक समस्याएँ,आर्थिक तथा सामाजिक समस्याएँ,बेरोजगारी इत्यादि । इन समस्याओं का समाधान निकालना अत्यंत जरूरी है। कई लोग तथा संस्थाएँ इसका समाधान निकालने की कोशिश कर रहे हैं |इसमें साहित्य भी अपना योगदान दे रहा है । रचनाकार अपने रचनाओं से लोगों को जागरूक करने की कोशिश कर रहे हैं तथा समाज में हो रही घटनाओं के बारे में बता रहे हैं। ऐसे ही साहित्यकारों में से एक कवि अनुज लुगुन जी हैं, जो झारखंड के निवासी हैं ।वे हिंदी के एक महान कवि है। उन्होंने अपनी कविताओं में आदिवासी समस्याओं के बारे में लिखा है तथा उनके कई समाधान भी बताए गए हैं ।

सरकार भी आदिवासियों के लिए कई योजनाएँ बनाती है परंतु वो लागू नहीं हो पाती है । इसके कारण उनकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति बिगड़ती जा रही है। इसलिए आदिवासी समाज खुद के अस्तित्व तथा अधिकार के लिए निरंतर लड़ रहे हैं। उन्हें मदद के लिए अब कई लोग जुड़ गए हैं।साहित्य में भी आदिवासी विमर्श उभर कर आया हैं। जसिंता केरकेट्टा, मैपती कुमार,वंदना टेटे ,रामदयाल मुंडा इत्यादि साहित्यकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान देकर काव्य के माध्यम से आदिवासियों की समस्याओं को समाज के सामने लाने का प्रयास किया गया। आदिवासियों का इतिहास बहुत बड़ा है, परन्तु इतिहास में उन्हें उस तरह का स्नान नहीं मिला है। संविधान में उन्हें अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत संबोधित किया गया है ।उनके लिए कई अधिनियम भी लागू किए गए हैं । उन्हें इसका लाभ नहीं मिल पाता

हैं।इस शोध कार्य के द्वारा कवि अनुज लुगुन की काव्यदृष्टि को समझ पाएँगे और उनकी जीवनशैली को समझकर आदिवासियों की समस्याओं के बारे में भी जान सकेंगे।

1.9)**<u>संदर्भ सूची:</u>**

आधार ग्रंथ–

- लुगुन अनुज, 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2018
- लुगुन अनुज,'पत्थलगड़ी' , वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2021
- लुगुन अनुज,'अघोषित उलगुलान' ,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण – 2023

संदर्भ ग्रंथ

1-चौरे नारायण, आदिवासियों के घोटुल,विश्वभरती प्रकाशन,तृतीय संस्करण 2010,नागपुर–440012

2-वहीं

3-https://ln.run/I2tfk

4–लुगुन अनुज, 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2018

5-वहीं

6-वहीं

7-वहीं

8-रमणिका गुप्ता (संपादक), 'आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह (झारखंड)', रमणिका फाउंडेशन, नई दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण-2015

9-रमणिका गुप्ता (संपादक), 'आदिवासी समाज और साहित्य', कल्याणी शिक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2015 (पृ. संख्या-80)

10-उमा शंकर चौधरी (संपादक), 'हाशिये की वैचारिकी', अनामिका पब्लिकेशन एँड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि., नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2008(पृ. संख्या-312)

11-शर्मा विशाल,कोल्हारे दत्ता,'आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति',स्वराज प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण–2016

12–गुप्ता रमणिका(संपादक), 'आदिवासी साहित्य यात्रा' रमणिका फाउंडेशन, पाँचवा संस्करण– 2018

13-अश्विन कुमार पंकज(संपादक) 'प्राथमिक आदिवासी विमर्श' ,प्यारा केरकट्टा फाउंडेशन , राँची, झारखंड,प्रथम संस्करण– 2017

सहायक ग्रंथ

अंतरजाल पर उपलब्ध शोध प्रबंध

- Ms Shreya Mrinal , Mr Sudhir Kumar,Dr Pragya Shukla,'TRANSLATING WRITINGS OF INDIGENOUS POETS

OF JHARKHAND: GAINING ACCESS TO VALUABLE KNOWLEDGE SYSTEMS'Journal of Research Administration– Society of Research Administrators International,2023

- अनुज लुगुन,मुण्डारी आदिवासी गीतों में जीवन-राग और आदिम आकांक्षाएँ,(शोध प्रबंध) ,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, कला संकाय वाराणसी-221005, वर्ष: 2014
- आनन्द कुमार पटेल'आदिवासी जीवन का सांस्कृतिक पक्ष और हिंदी के उपन्यास'(शोध प्रबंध),भारतीय भाषा केंद्र (हिंदी) भाषा एवं साहित्य पीठ दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया ,बिहार,वर्ष – 2020 ई.

अलोचनातात्मक पुस्तके

- डॉ. रजत रानी 'मीनू' वंदना(संपादक) अस्मितामुलक विमर्श और हिंदी साहित्य,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,आवृत्ति–2017
- गुप्ता रमणिका(संपादक),आदिवासी–सृजन,मिथक एवं लोककथाएँ
- जगदलपुरी लाल,वैष्णव हरिहर ,बस्तर की लोककथाएँ
- टेटे वंदना, ' कवि मन जनी मन – आदिवासी स्त्री कविताएँ' राधाकृष्ण पेपरबेग्स,पहला संस्करण –2019
- रमणिका गुप्ता (संपादक), 'विमुक्त घुमंतु आदिवासियों का मुक्ति संघर्ष', कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2015

- संतोष भारतीय (संपादक), 'दलित अल्पसंख्यक सशक्तिकरण', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2008
- रमणिका गुप्ता (संपादक), 'आदिवासी और नयी शताब्दी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002, द्वितीय संस्करण-2008
- कठेरिया कमल,'अस्मिताओं का संघर्ष',वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2015

मराठी उपन्यास

- देसाई माधवी,सुंदरबन(उपन्यास),माणिक प्रकाशन ,कोल्हापुर,संस्करण–2011

पत्रिकाएँ

- कौशिक माधव,शर्मा कुमुद,श्रीनिवासराव के.,समकालीन भारतीय साहित्य(द्वैमासिक पत्रिका),वर्ष:43,अंक–227, मई–जून 2023
- लमही:,कवि मूल्यांकन–कविता का वर्तमान और वर्तमान की कविता,प्रधान सम्पादक–विजय राय,वर्ष:16, अंक:1, जुलाई –सितंबर2023
- नट्टाल मार्क,'आदिवासी विषयसी:जलवायु परिवर्तन और आदिवासी जन' अंक 5,अगस्त 2008,बिन्द्राय इंन्सटीट्यूट फॉर रिर्सच स्टडी एँड एक्शन्,पुरुलिया रोड राँची-834001 (झाड़खण्ड)

अंतरजाल पर उपलब्ध पुस्तके

- Chattopadhyay ,' Redefining Tribal Identity–The changing Identity of the Santhals in South – West Bengal,Primus Books, Delhi, first edition 2014.
- Abhay Flavian Xaxa G.V. Devy ,'Rethinking India: Being Adivasi-Existence , Entitlement, Exclusion'Penguin Books

अंतरजाल पर उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री

- https://youtu.be/CiquuG1F0K4?si=7JpLnxB4nzTHZj8V
- https://youtu.be/_A7Z_wm_NKU?si=icApVU7300nD2eqN
- https://youtu.be/hsexU6hk7MM?si=tdm7o9yKVPWnKlsH
- https://youtu.be/rkzCmGRr5m0?si=fOhle0l6oGl86mEd
- https://youtu.be/dthqQGTafSU?si=eJqhtcMft5OB5hGS
- https://youtu.be/Duu5B97HheI?si=dlU1gScVIBlNs1_e
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/browse?type=author&value=Lugun%2C+Anuj

- https://books.google.com/books/about/Encyclopaedia_of_Scheduled_Tribes_in_Jha.html?id=W5dVaq4
- https://www.researchgate.net/publication/327595137_Adivasi_studies_From_a_historian's_perspective
- https://thefollowup.in/jharkhand
- https://www.gkexams.com/ask/11130-Aadiwasi-Samvidhan
- https://www.tak.live/sahitya-tak/video/the-moon-is-still-waiting-for-that-woman-anuj-lugun-sanjeev-paliwal-sahitya-tak
- https://vaniprakashan.com/author-details/2094-anuj-lugun
- https://www.bhaskar.com/jharkhand/gumla/news/anuj-lugun-who-created-tribal-life-in-poetry-got-yuva-sahitya-akademi-award-074505-4774391.html
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%A1%E0%A4%BE
- https://www.apnimaati.com/2021/07/blog-post_35.html

द्वितीय अध्याय:

अनुज लुगुन: सामान्य परिचय

30

2)अनुज लुगुन: सामान्य परिचय

2.1)अनुज लुगुन – व्यक्तित्व

अनुज लुगुन का जन्म, 10 जनवरी 1986 को झारखंड के सिमडेगा जिले के जलडेगा पहानटोली में हुआ।उनके पिता का नाम श्री ऐरेनियुस लुगुन और माता का नाम श्रीमती जयमिला लुगुन है।वे झारखंडी मुंडारी परिवार में जन्मे है। शाहिद विलियम झारखंड के आदिवासी आंदोलन के प्रमुख सेनानी थे।वे अनुज लुगुन के ताऊजी थे। उन्होंने आदिवासियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण काम किया है।अनुज लुगुन वर्तमान में दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी के सहायक अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं ।उनकी हाईस्कूल की पढ़ाई झारखण्ड माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, रांची में हुई ।स्नातक की पढ़ाई रांची विश्वविद्यालय, रांची में हुई।उनकी परास्नातक की पढ़ाई काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में हुई।उनकी बी.एड. की पढ़ाई काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में हुई। उनके पीएच.डी. का विषय ' मुण्डारी आदिवासी गीतों में जीवन राग एवं आदिम आकांक्षाएँ' था।

2.2)परिवेश

उनका बचपन सुदूर क्षेत्र में बिता है जो वर्तमान में सिमडेगा जिला है। यह ओडिशा का सीमांत क्षेत्र है। यह जिला एक तरफ ओडीशा की सीमा को छूता है तो दूसरी तरफ़ छत्तीसगढ़ को छूता है। अनुज लुगुन का गांव जंगलों के बीच में है। पढ़ाई के लिए उन्हें गांव के 10 किलोमीटर बाहर आना पड़ा। लचडागढ़ जगह पर अनुज लुगुन का बचपन बीता। पहली कक्षा से दसवीं तक उन्होंने लचरागढ़ में पढ़ाई की। वहीं नदी किनारे फुटबॉल खेलते खेलते उनका बचपन बीता। उसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए अनुज लुगून ने रांची आए।उन्होंने गाँव में रहकर खेत, जंगल, त्योहार, नृत्य, गीत इत्यादि का आनंद लिया है। वे उनसे बहुत गहराई से जुडे रहे।जब पहली बार रांची चले गए तब वह दुनिया उनके लिए नई थी। उस समय में रांची झारखण्ड बन चुका था।

2.3)कृतित्व

2.3.1) लंबी कविता:

- 'बाघ और सुगना मुंडकी की बेटी(2017ई.वी.)

– अनुज लुगुन की प्रथम लंबी कविता 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' को तीन खंडों में बाँटा है।प्रथम खंड 'बाघ' शीर्षक दिया गया है। इसमें बताया गया है कि प्राकृतिक बाघ जंगलों में रहता है और दूसरी तरफ का बाघ संसद में रहता है, जो गैर आदिवासी है। उन्हें प्राकृतिक भाग से डर नहीं है। उन्हें जंगल के उस ओर के बाघ से डर है।कवि ने बाघ को एक प्रतीक के रूप में उपयोग किया है। वे 'बाघपन' की विचारधारा के बारे में बात करते हैं। मानव सत्ता और

लालसा में इतना अंधा हो गया है कि उससे संवेदनशीलता खत्म हो गई है। इसका प्रभाव आदिवासियों पर पड़ा है। अब उनमे भी वह विचारधारा फैल रही है। इस काव्य में कवि ने काल्पनिक पत्रों का इस्तेमाल किया है, परंतु वह ऐतिहासिक और मिथकों और यथार्थ से भी जुड़े हुए हैं।

दूसरा खंड 'सुगना मुंडा' नाम से है। यह नौ पन्नों की कविता है। सुगना मुंडा बिरसा मुंडा के पिता हैं। परन्तु बिरसा के नाम को परिवर्तित कर के उसे बिरसी का काल्पनिक नाम दिया है । इससे वे दिखाना चाहते हैं कि मुंडा आदिवासी समाज एक पुरुष सत्तात्मक समाज नहीं है।उनमें एकता, समानता, सहजीविता पाई जाती है। अनुज लुगुन का कहना है कि

' सुगना मुंडा जंगल का पूर्वज है

और जंगल सुगना मुंडा का'

(पृष्ठ संख्या 36 ,बाघ और सुगना मुंडा की बेटी।)

इस खंड में इतिहास, लेखन, भाषा, शोषण इत्यादि समस्याओं के बारे में बताया गया है। अपनी कविताओं में कवि ने मौखिक साहित्य और आदिवासी इतिहास पर प्रकाश डाला है।उनका मानना है है की पूँजीवादी समाज ने इतिहास लेखन में आदिवासियों के योगदान या संघर्ष के बारे में उतना नहीं लिखा है जितना लिखने की ज़रूरत थी। उसी तरह आदिवासियों में स्त्री पुरुष में समानता की भावना को प्रकट किया है। वे सब को बाघपन से परिचित कराते हैं ताकि सभी लोग बाघपन की विचारधारा से बचें।

इस लंबी कविता का तीसरा खंड का नाम 'सुगना मुंडा की बेटी' है।यह खंड बरसी पर आधारित है। यह सबसे लंबा काव्य खंड है जो 64 पन्नों का है।

2.3.2)काव्य संग्रह–

2.3.2.1)'पत्थलगड़ी'(2021ई.वी.)

'पत्थलगड़ी' इस काव्य संग्रह में कुल 54 कविताएँ संकलित हैं ।इस काव्य संग्रह में कवि ने प्रदूषण, शिक्षा, स्त्री शोषण, आदिवासी इतिहास लेखन ,नागरिकता, असमानता इत्यादि विषयों पर लिखा है ।

इस काव्य संग्रह के पहले पन्ने पर ही अनुज लुगुन ने लिखा है कि, " औपनिवेशिक समय में जब शासन ने आदिवासियों से उनकी जमीन का मालिकाना सबूत माँगा तो कचहरी में आदिवासियों के साथ पत्थर भी खड़े हुए। अंग्रेजों की अदालत ने आदिवासियों के पक्ष में खड़े पत्थरों की गवाही को स्वीकार नहीं किया। उनकी ज़मीन पर सेंध लगाने के लिए अंग्रेजों ने उनके पत्थरों के प्रयोग पर निषेध लगाया। उसके बाद जब-जब आदिवासियों ने अपनी जमीन का दावा किया, तब-तब शासन ने उनकी पत्थलगड़ी पर निषेध लगाया। सहजीविता और स्वायत्तता को कुचलने की शासन की साजिश बहुत पुरानी है। दुखद है कि आज भी कई आदिवासी गाँव पत्थलगड़ी करने के आरोप में देशद्रोही माने गए हैं। आज जब फिर से आदिवासियों से उनकी जमीन का पट्टा माँगा जा रहा है तो पत्थर फिर से उनके पक्ष में गवाही के लिए खड़े हुए हैं। इस बार आदिवासियों के साथ केवल पत्थर ही नहीं खड़े हैं, बल्कि उनके साथ कविता भी खड़ी हो गई है।"[1]

34

इस काव्य संग्रह में कवि ने अपना विद्रोह व्यक्त किया है।इस संग्रह में एक कविता है जिसमें कवि फिलिस्तीनी बच्चे का जिक्र करते है, जो टैंक के सामने खड़े होकर पत्थर फैंकता है और वे कहते हैं कि, दमन तेज़ हो तो प्रतिरोध स्वभाविक है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि आदिवासी पत्थरबाज़ नहीं हैं। आदिवासियों के लिए पत्थर उनकी पहचान है।वे अपने अस्तित्व और अधिकार के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अनुज लुगुन की कविताएँ शोषण के विरुद्ध संघर्ष कर के बाहर निकलने का रास्ता बताती 'पत्थलगड़ी' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है।इसे बौद्धिक उलगुलान की दिशा में एक परिपक्व प्रयास की तरह देखा जाना चाहिए।

2.3.2.2)अघोषित उलगुलान' (2023 ई. वी.)

इस काव्य संग्रह में कवि ने आदिवासियों द्वारा किए गए विद्रोह के बारे में लिखा है। नागरिकता ,प्रदूषण ,असमानता ,शिक्षा ,राजनीति इत्यादि विषयों पर उन्होंने इस कविता संग्रह में लिखा है। संग्रह में कुल 49 कविताएँ संकलित हैं। इस काव्य संग्रह में उन्होंने 21 वीं सदी में होने वाली कई घटनाओं के बारे में लिखा है ,जिसका संदर्भ लेकर वे आदिवासियों की अनेक समस्याओं के बारे में पाठकों तल पहुँचाते हैं।ये समस्याएँ प्रासंगिक और यथार्थ से जुड़ी हुई हैं।

2.3.3)संपादित पुस्तकें

- आदिवासी अस्मिता–प्रभुत्व और प्रतिरोध

2.3.4)स्तम्भ लेखन

- दैनिक अख़बार– प्रभात खबर में स्तम्भ लेखन।

2.4)काव्य दृष्टि

अनुज लुगुन ऐसे क्षेत्र में रहे है, जो एक राजनीतिक सीमा के अंतर्गत आता है। वे मानते है कि मनुष्य केवल किसी देश का नहीं बल्कि इस धरती का नागरिक होना चहिए।जहाँ वह सामूहिकता से रहे ,सहजीविता से रहे ,पर्यावरण के साथ रहे ,जहाँ वह कभी अपनी धरती को धोखा ना दे। उन्होंने हमेशा से सभी को एक सृष्टि के रूप में देखा है ,जो हर किसी की होती है। जहाँ भेदभाव नहीं होता और असमानता नहीं होती।

आदिवासियत को जीवन-पद्धति के साथ-साथ एक वैचारिक अवधारणा के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए अनुज लुगुन ने प्रतिरोध की काव्य-चेतना को एक सशक्त मोर्चा देने का प्रयास निरंतर अपनी कविता में किया है। वे उस जीवन के बीचोंबीच रहते आए हैं, जो मुख्यधारा से दूर अपनी प्राकृतिक जिजीविषा और सम्पूर्णता के साथ पेड़ों, पहाड़ों, नदियों और पशु-पक्षियों से अपने आदिम रिश्ते निभाते हुए अपने अस्तित्व में सार्थक है । जिसे चाहें तो मुख्यधारा के विकल्प के रूप में भी देखा जा सकता है। लेकिन होता इसके विपरीत है।

अनुज लुगुन की कविताएँ लगातार इस संघर्ष के साथ चलती हैं।उनकी कविता शोषितों को अपने अधिकार के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है।वे केवल मुंडा आदिवासी तक सीमित नहीं रहे ,बल्कि उन्होंने विश्व स्तर पर आदिवासियों की समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त किए है।हिन्दी में लिखी गयी आदिवासी जीवन, समाज, चिन्ता की कविता में अनुज लुगुन सर्वोपरि हैं। उनकी चिन्ताएँ बड़ी और वैश्विक हैं।उनकी कविता में बार-बार 'सहजीविता' की बात कही गयी है। आदिवासी समाज में जो 'सहजीविता' है, वह नष्ट होती गयी है। 'पूर्वजों की सहजीविता' की चिन्ता कवि को है। अपने पूर्वजों से विच्छेद का अर्थ उनके लिए अपने अस्तित्व की रीढ़ का तोड़ा जाना है।चेतना और विचार की निर्मिति पर कवि का ध्यान है। सभ्यता के विकास के बाद ही, पहले धीमी गति से और बाद में तीव्र गति से ज़मीन, जंगल, नदियाँ, आदिवासी, उनके सहजीवी सभी खतरे में पड़े।

उन्होंने भाषा,सभ्यता,जल,जंगल,जमीन,श्रमजीवी,शोषण,राजनीति, आरक्षण,आदिवासी अस्मिता तथा अस्तित्व,जीवन संघर्ष,प्रेम, मानवता, इत्यादि विषय पर अपनी कलम चलायी है।उन्होंने अपनी कविताओं में कई जगहों पर अंग्रेजी ,हिंदी ,तथा मुंडारी भाषा का प्रयोग भी किया है।

2.5)पुरस्कार

अनुज लुगुन को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है :

- 'भारत भूषण अग्रवाल सम्मान',नयी दिल्ली(2011)
- 'सावित्री त्रिपाठी साहित्य सम्मान' ,बनारस(2014)
- 'भारतीय भाषा परिषद् का युवा सम्मान', कोलकाता(2018)
- 'साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार' ,नयी दिल्ली(2019)

2.6)निष्कर्ष

अनुज लुगुन झारखंड के निवासी है।वर्तमान में दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी के सहायक अध्यापक के रूप में कार्य कर रहे है।उनका बचपन जी पर्यावरण के बीच में बीता ,जिसके वजह से उनका पर्यावरण से गहरा संबंध बना रहा।वी सहजीविता में विश्वास रखते है।वे पर्यावरण प्रेमी ,शिक्षक के साथ ही प्रसिद्ध वरचनाकार है। उन्होंने कुल दो काव्य संग्रह(पत्थलगड़ी और अघोषित उलगुलान) लिखे और एक लंबी कविता(बाघ सुगना मुंडा की बेटी)

'बाघ सुगना मुंडा की बेटी' कविता में आदिवासियों को बाहरी तथा अंतरिक दुश्मन के बारे में बताकर आदिवासियों को जागृत करने का कार्य करते है।वे शोषण के खिलाफ़ लड़ते हैं।मिथकों तथा इतिहास का इस्तेमाल करके आदिवासियों की समस्याओं को और उनकी विचारधारा को व्यक्त किया है।'पत्थलगड़ी' इस काव्य संग्रह में कवि प्रदूषण ,शिक्षा,स्त्री

शोषण, गरीबी,असमानता,नागरिकता,राजनीति,इत्यादि अनेक समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त करते हैं।

अनुज लुगुन का तीसर काव्य संग्रह 'अघोषित उलगुलान' है। इसमें कवि ने राजनीति के विरुद्ध आवाज़ उठाकर अपना विद्रोह व्यक्त भी है।कवि ने शहरीकरण,नागरिकता, स्त्री शोषण,स्त्री दृष्टि,मजदूर, आदिवासी इतिहास लेखन इत्यादि विषयोंपर लिखा हैं।कवि सामूहिकता ,सहजीविता,एकता में विश्वास रखते है।उनकी भाषा मुंडारी है ,जो कविताओं में कई जगह पर दिखाई देती है।

2.7)संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ–

- लुगुन अनुज, बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, दवितीय संस्करण- 2018
- लुगुन अनुज, पत्थलगड़ी वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2021
- लुगुन अनुज, अघोषित उलगुलान वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सस्करण-2023

संदर्भ ग्रंथ

1– लुगुन अनुज, पत्थलगड़ी वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2021

सहायक ग्रंथ

- https://ln.run/afOvf
- https://vaniprakashan.com/authors

तृतीय अध्याय :

आदिवासी : समाज एवं साहित्य

41

3)आदिवासी : समाज एवं साहित्य

3.1)आदिवासी: परिभाषाएँ

प्रसिद्ध मानवशास्त्री एवं समाजविज्ञानियों ने अपने-अपने क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप अलग-अलग शब्दों को चुनकर आदिवासी शब्द की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार दी है-

डी. मजूमदार के अनुसार, "आदिम जनजाति अर्थात् सामान्य नाम, सामान्य बोली, सामान्य भू-भाग को धारण करने वाला समूह, यह समूह विवाह और व्यवहार के बारे में कुछ विशिष्ट निषेध का पालन करते हुए अपने समाज में परस्पर सम्बन्धों और कर्तव्यों के निर्धारण में पहचान का बोध कराता है।"[1]

ए.आर.देसाई के अनुसार, "आदिवासी समाज अथवा जो समाज अभी भी जंगलों में रहता है और पुरानी पद्धति से जीवनयापन करता है।"[2]

डॉ. रिव्हर्स कहते हैं कि, "जनजाति अर्थात् ऐसा सामाजिक समूह जिसकी एक सामान्य भाषा रहती है और वह सामान्य उद्देश्यों के लिए संगठित रूप से कार्य करता है।"[3]

यू.एन.ओ. ने अपने घोषणा पत्र में आदिवासी राष्ट्र को परिभाषित किया है। इसके अनुसार "आदिवासी राष्ट्र का तात्पर्य उन लोगों के वंशजों से है जो किसी देश की वर्तमान भूमि के पूरे या कुछ भाग पर विश्व के अन्य भागों की किसी भिन्न संस्कृति अथवा नस्ल के लोगों द्वारा पराजित कर दिए जाने या उनके साथ किसी समझौते के तहत या अन्य किसी तरह

42

से वर्चस्वहीन अथवा औपनिवेशिक स्थिति में ढकेल दिए जाने के पहले से ही, वहाँ रह रहे थे।"[4]

भारतीय संविधान ने उन्हें 'अनुसूचित आदिवासी' के रूप में संबोधित किया है। अनुच्छेद 366(25) केवल अनुसूचित जनजातियों को परिभाषित करने की प्रक्रिया प्रदान करता है: "अनुसूचित जनजातियों का अर्थ है ऐसी जनजातियाँ या जनजातीय समुदाय या ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों के कुछ हिस्से या समूह जिन्हें अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति माना जाता है। इस संविधान के उद्देश्य।"[5]

जार्ज पीटर मर्डाक जनजाति समुदाय को परिभाषित करते हुए लिखते है कि, "जनजाति एक सामाजिक समूह होता है। जिनकी अपनी एक भाषा होती है। तथा उसकी भिन्न संस्कृति व एक स्वतंत्र राजनीतिक संगठन होता है।"[6]

मानव शास्त्र की पुस्तक 'नोट्स एण्ड क्वेरिस' में जनजाति समुदाय को इस तरह परिभाषित किया है, "जनजाति एक ऐसा समुदाय है जो किसी विशेष भू का स्वामी हो, जो राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से श्रृंखलाबद्ध स्वायत शासन चला रहा हो।"[7]

गिलिन एवं गिलिन ने अपनी पुस्तक 'कल्चर ऐन्थ्रोपोलॉजी' में लिखते है, "स्थानीय आदिवासियों के किसी भी ऐसे संग्रह को हम जनजाति कहते हैं, जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो तथा सामान्य संस्कृति के अनुसार व्यवहार करता है।"[8]

इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया में आदिवासी समुदाय को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "एक आदिम जाति परिवारों का वह समूह जिसका एक सामान्य नाम होता है,

जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं तथा एक सामान्य क्षेत्र में या तो वे रहते हैं, या अपने को उसी क्षेत्र से सम्बन्धित मानते हैं तथा यह समूह अंतर्विवाही होते हैं।"[9]

ऊपर वर्णित परिभाषाओं को संपूर्ण नहीं माना जा सकता। फिर भी इन परिभाषाओं, तथ्यों के अध्ययन-अवलोकन के दौरान यह कहा जा सकता है कि आदिवासी एक निश्चित भू-भाग या विशेष पर्यावरण में निवास करने वाला एक वाला समुदाय है।

3.2)आदिवासी समाज

जब मानव समाज का उल्लेख होता है,तब सम्पूर्ण दुनिया में व्याप्त विभिन्न परंपरा,संस्कृति,भाषा,रंग,धर्म,वर्ग,जाति,विचार के लोक पाए जाते हैं।आदिवासी समाज भी मानव समाज का अभिन्न भाग है।आदिवासी समाज अपनी परंपरा तथा संस्कृति को बचाए रखने की कोशिश करते हैं।उनके पास पारंपरिक ज्ञान का भंडार होता है। इसके बावजूद उन्हें समाज में दोयम दर्जा दिया गया है।उन्हें मुख्यधारा के समाज में सम्मिलित नहीं किया जाता।वे जंगलों में रहते हैं।वे सहजीविता में विश्वास रखते हैं ।आदिवासियों को असभ्य,जंगली,बर्बर, इत्यादि विशेषणों से जाना जाता है।वे अपने अधिकार से वंचित रहते है।मुख्य तौर पर वे सत्ता या गैर आदिवासी लोगों द्वारा मानसिक तथा सामाजिक रूप से शोषण के पात्र बनते चले आ रहे हैं। आदिवासी समाज हमेशा से ही अपनी संस्कृति तथा पर्यावरण को बचाता आया है।यही उनकी जीवन शैली है ,क्योंकि उनके जीवन का मूल आधार ही जल ,जंगल और ज़मीन है।गैर आदिवासी समाज इसके विपरित कार्य करते हुए नज़र आते हैं। गैर आदिवासी समाज वर्चस्व पर आधारित होता है ,जो अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण तथा आदिवासियों का

44

शोषण करता है।आदिवासी समाज सहजीविता और सामूहिक जीवन शैली में विश्वास रखता है।इसलिए सदियों से आदिवासी समाज शोषण के विरुद्ध और अधिकार के लिए संघर्ष करते हुए नज़र आता है।

3.3)**आदिवासी जीवन शैली**

आसिवासी जीवन शैली गैर आदिवासियों से भिन्न है। क्योंकि वे अपनी परंपरा तथा संस्कृति को बचाने के प्रयास करते हैं ।जंगल ही उनका जीवन होता है।वे असभ्य नहीं कहे जा सकते , बल्कि वे पर्यावरण का महत्व समझते हैं।उनके पास पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान संपदा है ।उनकी जीवन शैली में जीवन जीने के वैज्ञानीक तरीके होते हैं ।

समाज में भाषा महत्वपूर्ण किरदार निभाती है।कोई भाषा अच्छी या बुरी नहीं होती।समय के साथ उसमें बदलाव होते रहते हैं । भारत में ही कितनी सारी भाषाएँ हैं।उसी तरह आदिवासी भाषाएँ हैं।गैर आदिवासियों की भाषा अच्छी और आदिवासियों की भाषा पिछड़ी हुई भाषा है,यह मानना ग़लत है।

"घोटुल गोटुल का प्रचलित रूप है। यह आदिवासी समाज की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्था है जो प्राचीन आदिकाल से चलती आयी है।घोटुल स्थापना के विषय में विविध दंतकथाएँ प्रचलित हैं जिन से इस के उद्देश्य के संकेत भी मिलते हैं। मुख्यतः इस का श्रेय कुप्पार लिंगों को ही दिया जाता हैं। लिंगों एक महान व्यक्तित्व के रूप में दृष्टिगत होता है जिस में समाज- संगठन, कला विशेषतः संगीत उन्नयन और सुधार आदि विविध गुणों का समावेश था। वेरियर एल्विन ने एक जगह लिखा है कि लिंगों की मृत्यु के बाद लोगों ने उस की याद में

और उस की आत्मा की शान्ति के लिए जगह-जगह घोटुल बनाये। दूसरी ओर यह परम्परा भी पायी जाती है कि स्वयं लिंगों ने मुरिया बच्चों को सेमल तृक्ष के नीचे धार्मिक तथा बौद्धिक शिक्षा दे, घोटुल का आरम्भ किया था"[10]

"डॉ. हार्डसन के अनुसार घोटुल का अर्थ युवा वर्ग का एक साथ समुदाय में रहना है।"[11] "शेक्सपियर के मतानुसार "जब समुदाय के सभी लोग संभोग के लिए एकान्त चाहते थे, तब ऐसी स्थिति में 'घोटुल' जैसी संस्था का निर्माण हुआ।" इसी मत से मिलती-जुलती कल्पना डॉ. ग्रियर्सन ने की जिस में उस समय की तत्कालीन परिस्थितियों में सहवास करना वर्जित माना जाता था। तब ऐसी स्थिति में घोटुल की कल्पना की गई, जिसे साकार किया गया।...जीवन साथी का चुनाव करना आदिवासियों में बहुप्रचलित है। जिस के कारण इन्हें किसी प्रकार की अड़चने नहीं आ पाती। जीवन साथी के चुनाव से संबंधित कई रीतियाँ-नीतियाँ हैं, जिन में विवाह प्रथा, लमझेना प्रथा, वधूमूल्य प्रथा, भगोरिया प्रथा, ढाठिया प्रथा, अस्या विवाह, घरघुसी विवाह, आदि प्रचलित हैं।जिन के आधार पर आदिवासी जीवन साथी का चुनाव करते है।" [12]

"भाषा रिसर्च एंड पब्लिकेशन सेंटर द्वारा किए गए 'भारतीय भाषाओं के लोकसंरक्षण' का अध्ययन बताता है कि विगत पचास वर्षों में भारत में बोली जाने वाली साढ़े आठ सौ भाषाओं में तकरीबन दो सौ पचास भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं और एक सौ तीस से अधिक भाषाओं का अस्तित्व खतरे में है। विलुप्त होने वाली भाषाओं में सर्वाधिक आदिवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएं हैं। शोध के मुताबिक असम की पचपन, मेघालय की इकतीस, मणिपुर की अट्ठाईस, नगालैंड की सत्रह और त्रिपुरा की दस भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं। "
13

'आदिवासियों की परंपरा के अनुसार मृतक के कब्र पर का पत्थर गाड़ा जाता है और उसके उपर कुछ संदेश लिख कर दिए जाते हैं। ब्रिटिश काल में यह परंपरा जमीन बचाने का प्रतीक बन गया। बिरसा मुंडा के आंदोलन उलगुलान के दौरान अंग्रेजों ने समझ लिया कि आदिवासियों के साथ समझौता करना ही बेहतर होगा।उन्हे लगा कि जमीन की समस्या का समाधान हो जाएगा तब आदिवासी उसका समर्थन कर देंगे। वर्ष 1908 में छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट लाया गया, जिसके तहत आदिवासियों की जमीन को कोई भी बाहरी (दिकू) नहीं खरीद सकता। इसमें भी जमीन के लिए ठोस प्रावधान किए गए।धीरे-धीरे पत्थलगड़ी की यह सांस्कृतिक परंपरा उनके राजनीतिक अधिकारों की गवाही के प्रतीक बनते गए।2016 में झारखंड के रघुवर दास की सरकार ने 'लैंड बैंक पॉलिसी' के नाम पर पेसा एक्ट में संशोधन करके विकास कार्य के नाम पर कम्पनियों को देने की योजना बनायी। आदिवासियों ने इसका विरोध किया। उनसे जमीन के पट्टे माँगे जाने लगे। इसके बाद 'पत्थलगड़ी आंदोलन' खूंटी से शुरू होकर पूरे झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा तक फैल गया। दिकूओं का आदिवासियों के गाँव में प्रवेश वर्जित कर दिया गया।सरकार द्वारा राजद्रोहियो के मुकदमे चले और आंदोलन को नक्सल समर्थित बताया गया। '[14]

3.4) **भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए स्थान–**

भारत का संविधान, भारत का सर्वोच्च विधान है जो संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को पारित हुआ तथा 26 जनवरी 1950 से प्रभावी हुआ।यह दिन (26 नवम्बर) भारत

के संविधान दिवस के रूप में घोषित किया गया है। जबकि 26 जनवरी का दिन भारत में गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अनुसूचित जन जातीय आदिवासियों को अरण्यवासी, वनवासी इत्यादि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है क्योंकि मूलतः वे वन-प्रदेश में ही रहते थे जहाँ नागरी संस्कृति की पैठ नहीं थी।भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' पद का उपयोग किया गया है। भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में आंध, गोंड, खरवार, मुण्डा, खड़िया, बोडो, कोल, भील, कोली, सहरिया, संथाल, भूमिज, हो, उरांव, लोहरा, बिरहोर, पारधी, असुर, नायक, भिलाला, मीणा, धानका आदि हैं।संविधान की आठवीं अनुसूची में भी आदिवासी भाषाओं को सम्मिलित किया है :

(1) असमिया, (2) बंगाली (3) गुजराती, (4) हिंदी, (5) कन्नड, (6) कश्मीरी, (7) कॉकणी, (8) मलयालम, (9) मणिपुरी, (10) मराठी, (11) नेपाली, (12) उड़िया, (13) पंजाबी, (14) संस्कृत, (15) सिंधी, (16) तमिल, (17) तेलुगू (18) उर्दू (19) बोडो, (20) संथाली, (21) मैथिली, (22) डोंगरी।

भारतीय संविधान में वंचित, शोषित वर्ग के लिए बहुत से प्रावधान किये गए हैं , ताकि आदिवासी वर्ग मुख्य धारा के लोगों के साथ चल सके। भारतीय संविधान अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास एवं सुरक्षा का प्रावधान करता है। 'भारतीय संविधान निर्माता डॉ भीम राव अंम्बेडकर में समाज के वंचित, शोषित आदिवासियों की सुरक्षा को अहम् मानते हुए सुरक्षा के लिए निम्न प्रावधान किये जिन्हें अनुच्छेद 15 (4) (164), 19 (5), 23, 29,

164, 340, 332, 334, 335, 338, 339(1), 371 (क). 371 (ख). 371 (ग) पाँचवीं सूची एवं छठी सूची में समाहित हैं। जिनमें इन्हें शोषण करने वालों के लिए जुर्माने एवं दण्ड का विधान किया गया है।दूसरी ओर इनके विकास को लेकर संविधान में संम्बन्धित प्रावधान अनुच्छेद 275 (1) प्रथम उपबंध तथा 339 (2) में समाहित किये गए हैं, ताकि विकास के मामले में आदिवासी समाज भी मुख्य धारा के साथ-साथ चल '[15]

3.5) वैश्विक स्तर पर आदिवासियों के लिए प्रावधानः

संयुक्त राष्ट्र महासभा के घोषणा पत्र में आदिवासियों के अधिकार–

"अनुच्छेद-2: आदिवासियों और व्यक्तियों, अन्य सभी लोगों एवं व्यक्तियों की भांति ही स्वतंत्र और बराबर है तथा अपने अधिकारों, विशेषकर उनके आदिवासी होने के कारण मिले अधिकारों को इस्तेमाल करने में किसी भी तरह के भेदभाव से मुक्त रहने का अधिकार है।

अनुच्छेद-3: आदिवासियों को आत्मनिर्णय का अधिकार है। इस अधिकार से ही वे अपनी राजनितिक स्थिति स्वतंत्र रूप से तय कर सकते हैं और अपने आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के प्रयास कर सकते हैं।

अनुच्छेद-9: आदिवासियों को अधिकार होगा की संबद्ध समुदाय अथवा देश की परम्पराओ और रीतियों के अनुसार किसी भी आदिवासी समुदाय या देश को अपना ले. इस अधिकार के प्रयोग से किसी भी प्रकार का भेदभाव उत्पन्न नही होना चाहिए।

अनुच्छेद-13:

1. आदिवासियों को अधिकार होगा के वे अपने इतिहास, भाषाएं, मौखिक सिद्धांत, लेखन प्रणालिया और साहित्य को फिर सशक्त बना सके, प्रयोग कर सके और अपनी भावी पीढ़ियों को सौंप सके तथा समुदाय, स्थानो और व्यक्तियों के परंपरागत नाम रखे रहे।

2. अनुच्छेद-18: आदिवासियों को अधिकार होगा कि उन मामलो में निर्णय प्रक्रिया में उनकी हिस्सेदारी हो जिनसे उनके अधिकारों पर असर पड़ सकता है. इसके लिए उनके अपने तौर- तरीको से उनके ही द्वारा चुने गए प्रतिनिधि निर्णय प्रक्रिया में शामिल किये जा सकते हैं और साथ ही वे अपनी स्वयं की आदिवासी निर्णय प्रक्रिया भी स्थापित कर सकते हैं।

अनुच्छेद-21 : आदिवासियों को बिना किसी भेदभाव के अधिकार होगा कि अपनी आर्थिक एवं सामाजिक हालत सुधर सकें जिसमें शिक्षा का क्षेत्र, रोजगार, व्यवासायिक प्रशिक्षण, वृद्धजनों, महिलाओं, युवाओं, बच्चों और विकलांगो के अधिकार और ख़ास जरुरतों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

अनुच्छेद-25: आदिवासियों को परंपरागत रूप से अधिकृत और प्रयोग की जा रही जमीनों, भूखंडों, जलक्षेत्रों और तटीय सागरों तथा अन्य संशाधनों पर अपना विशिष्ट आध्यामिक सम्बन्ध बनाये रखने और उसे मजबूत करने का अधिकार है और साथ ही इस बारे में अपनी भावी पीढ़ियों के प्रति दायित्वा निभाने का अधिकार है।

अनुच्छेद-43: इसमें शामिल अधिकार दुनिया भर के आदिवासियों के अस्तित्व, मान, सम्मान, और कल्याण का न्यूनतम स्तर है।"[16]

"संयुक्त राष्ट्र की 'द स्टेट आफ द वर्ल्ड्स इंडिजिनस पीपुल्स' नामक रिपोर्ट से यह उद्घाटित हुआ था कि मूलवंशी और आदिम जनजातियां भारत सहित संपूर्ण विश्व में अपनी संपदा, संसाधन और जमीन से वंचित व विस्थापित होकर विलुप्त होने के कगार पर हैं। रिपोर्ट के मुताबिक खनन कार्य के कारण हर रोज हजारों जनजाति परिवार विस्थापित हो रहे हैं और उनकी सुध नहीं ली जा रही है। विस्थापन के कारण उनमें गरीबी, बीमारी और बेरोजगारी बढ़ रही है। नेशनल फेमिली हेल्थ (एनएफएच) सर्वे में यह खुलासा हुआ है कि कोलम (आंध्रप्रदेश और तेलंगाना), कोरगा (कर्नाटक), चोलानायकन (केरल), मलपहाड़िया (बिहार), कोटा (तमिलनाडु), बिरहोर (ओड़िशा) और शोंपेन (अंडमान और निकोबार) के विशिष्ट संवेदनशील आदिवासी समूहों की संख्या घट रही है और आदिवासी बच्चों की मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत से दोगुने स्तर पर पहुंच गई है। इस रिपोर्ट के मुताबिक जनजातीय बच्चों की मृत्यु दर 35.8 फीसद है, जबकि राष्ट्रीय औसत दर 18.4 फीसद है। इसी तरह जनजातीय शिशु मृत्यु दर 62.1 फीसद है, जबकि राष्ट्रीय शिशु मृत्यु दर सत्तावन फीसद है। यह आंकड़ा भारत की सांस्कृतिक विविधता पर मंडराते किसी खतरे से कम नहीं है।"[17]

सतत् विकास लक्ष्यों को वैश्विक लक्ष्यों के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा दुनिया के सामने आने वाली विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा निर्धारित 17 वैश्विक उद्देश्यों का निर्माण किया। ये लक्ष्य 2030 तक अधिक न्यायसंगत, समावेशी और टिकाऊ दुनिया बनाने की दिशा में देशों को मिलकर काम करने के लिए एक साझा खाका प्रदान करते हैं।

आदिवासी समाज का इतिहास बहुत पुराना है। सतत् विकास लक्ष्यों को वैश्विक लक्ष्यों के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा दुनिया के सामने आने वाली विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा निर्धारित 17 वैश्विक उद्देश्यों का निर्माण किया। ये लक्ष्य 2030 तक अधिक न्यायसंगत, समावेशी और टिकाऊ दुनिया बनाने की दिशा में देशों को मिलकर काम करने के लिए एक साझा खाका प्रदान करते हैं।विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार वर्ष 2030 ई.वी और 2050ई. वी के बीच, जलवायु परिवर्तन के कारण कुपोषण, मलेरिया, दस्त आदि से प्रति वर्ष 2,50,000 अतिरिक्त मौत होने की संभावना है। संयुक्त राष्ट्र का एजेंडा 2030' के अनुसार भूमि, क्षेत्र और संसाधनी पर आदिवासियों के अधिकारों को पूरा किए बिना विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना संभव नहीं है। उनका कहना है कि जलवायु परिवर्तन स्पष्ट रूप से केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं है. बल्कि गंभीर सामाजिक-आर्थिक निहितार्थ वाला मुद्दा है, क्योंकि उनके जीवन का मुख्य आधार जल, जंगल और जमीन हैं। पर्यावरण और भूमि के संसाधनों पर निर्भरता के कारण जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण इत्यादि समस्याएँ आदिवासियों के लिए गंभीर खतरे बने हैं। यह पारंपरिक जान उनकी संस्कृतियों के विघटन का कारण बनता है।

3.6) आदिवासी साहित्य एवं आदिवासी विमर्श

आदिवासी साहित्य की अवधारणा को लेकर तीन तरह के मत प्रचलित हैं–

"पहली अवधारणा गैर-आदिवासी लेखकों की है। परंतु समर्थन में कुछ आदिवासी लेखक भी हैं। जैसे- रमणिका गुप्ता, संजीव, राकेश कुमार सिंह, महुआ माजी, बजरंग तिवारी,

गणेश देवी आदि गैर-आदिवासी लेखक, और हरिराम मीणा, महादेव टोप्पो, आईवी हांसदा आदि आदिवासी लेखक।दूसरी अवधारणा उन आदिवासी लेखकों और साहित्यकारों की है जो जन्मना और स्वानुभूति के आधार पर आदिवासियों द्वारा लिखे गए साहित्य को ही आदिवासी साहित्य मानते हैं।अंतिम और तीसरी अवधारणा उन आदिवासी लेखकों की है, जो 'आदिवासियत' के तत्वों का निर्वाह करने वाले साहित्य को ही आदिवासी साहित्य के रूप में स्वीकार करते हैं। ऐसे लेखकों और साहित्यकारों के भारतीय आदिवासी समूह ने 14-15 जून 2014 को रांची (झारखंड) में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में इस अवधारणा को ठोस रूप में प्रस्तुत किया, जिसे 'आदिवासी साहित्य का रांची घोषणा-पत्र' के तौर पर जाना जा रहा है और अब जो आदिवासी साहित्य विमर्श का केन्द्रीय बिंदु बन गया है।"[18]

"जब हम आदिवासी साहित्य की परंपरा और विचारधारा का व्यवस्थित अध्ययन करेंगे तो उसकी प्रवृत्तियों को भी समझ पायेंगे। आदिवासी साहित्य के अध्येता प्रो. वीर भारत तलवार ने तद्भव 34 में छपे अपने लेख में आदिवासी संबंधी साहित्य की चार श्रेणियाँ बनाई है-

1. कुछ ऐसे लेखक है जो आदिवासी समाज के बारे में बहुत कम और सतही जानकारी रखते हैं और साथ ही अपने सवर्ण हिंदू संस्कारों से ग्रस्त हैं, अपने सामाजिक-सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है और उसी दृष्टि से आदिवासी समाज को चित्रित करते हैं।

2. दूसरी श्रेणी उन लेखकों की है जो लंबे समय से आदिवासियों के करीब रहते आए हैं और उनसे पूरी सहानुभूति रखते हैं, उनके समाज से थोड़ा-बहुत वाकिफ भी है। इनकी मुख्य

प्रवृत्ति आदिवासियों के दमन, शोषण और उत्पीड़न को चित्रित करने और उनकी आर्थिक राजनीतिक समस्याओं को उठाने की है।

3. उन लेखकों का साहित्य जो आदिवासियों के बीच लंबे समय तक रहे हैं, जिन्होंने उनका अच्छा और बुरा देखा है और उनकी प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास किया है।

4. चौथी श्रेणी खुद आदिवासियों द्वारा लिखे साहित्य की है। वह उन्होंने अपनी मूल भाषाओं में लिखा हो या हिंदी, बांग्ला या अन्य प्रादेशिक भाषाओं में, इससे फर्क नहीं पड़ता। इन चार श्रेणियों में से वीर भारत तलवार चौथी श्रेणी को ही प्रामाणिक आदिवासी साहित्य मानते हैं और शेष तीन श्रेणियों को आदिवासी संबंधी साहित्य। चौथी श्रेणी, यानी स्वयं आदिवासियों द्वारा लिखित साहित्य के बारे में वे लिखते है, इसकी गुणवत्ता बिल्कुल अलग किस्म की है। आदिवासियों के जीवन और समाज के सच्चे चित्र यहीं मिलते है।

आदिवासी साहित्य के नाम पर मुख्यतः तीन तरह का साहित्य हमारे सामने है:

- आदिवासियों के बारे में लिखा गया साहित्य।
- आदिवासियों के द्वारा लिखा गया साहित्य।
- आदिवासी दर्शन को आधार बनाकर लिखा गया साहित्य।

आदिवासियों के बारे में लिखे गए साहित्य का आदिवासी साहित्य के रूप में दावा करना सहज है इसीलिए शोधार्थी अक्सर रेणु के 'मैला आंचल के संथाल प्रसंग या योगेन्द्रनाथ सिन्हा के 'वनलक्ष्मी' से आदिवासी साहित्य की शुरुआत मान लेते हैं। कुछ लोग तो तुलसीदास के रामचरितमानस में आए वन के प्रसंगों को भी आदिवासी साहित्य में मान लेते

है और इसी दृष्टि से विश्लेषण करने लगते है। परिणाम यह होता है कि जहाँ भी वन, जंगल या किसी आदिवासी समुदाय का जिक्र आ जाता है, उसे ही आदिवासी साहित्य मान लिया जाता है और इससे 20वीं सदी के आखिरी दशक में प्रमुखता से उभरे आदिवासी साहित्य के आंदोलन के बारे में भ्रमों का निर्माण होता चला जाता है।

आदिवासी चिंतक हिंदी साहित्य में आए वन या आदिवासी प्रसंगों को आदिवासी साहित्य मानने से इनकार करते है ।इस तरह आदिवासी साहित्य के बारे में दूसरा विचार सामने आता है- आदिवासियों के द्वारा लिखा गया साहित्य ही आदिवासी साहित्य है। यह विचार स्त्रीवादी साहित्य और दलित साहित्य के प्रभाय में निर्मित हुआ है। जाहिर है इस तर्क की अपनी सीमाएँ हैं। अनुभूति की प्रामाणिकता किसी साहित्य का एकमात्र आधार नहीं हो सकती। आज जब आदिवासी समाज गहरे सांस्कृतिक हमलों से गुजर रहा है, ऐसे में आदिवासी समाज का सच लिखने के लिए केवल किसी समुदाय में पैदा हो जाना काफी नहीं है। आदिवासी समुदायों का बड़ी संख्या में हिंदूकरण और ईसाईकरण हुआ है। इसने उनकी मौलिक समझ और दर्शन को बहुत प्रभावित किया है।इस प्रक्रिया में आदिवासी साहित्य की अवधारणा को लेकर तीसरा विचार सामने आता है कि आदिवासी दर्शन को आधार बनाकर लिखा गया साहित्य ही आदिवासी साहित्य माना जाए। जाहिर है आदिवासी दर्शन ही वह तत्व है जो आदिवासी समाज और साहित्य को शेष समाज और साहित्य से अलग करता है। यह आदिवासी जीवन का मूल है और जिस पर चौतरफा हमले हो रहे हैं इसलिए जहाँ आदिवासी दर्शन आदिवासी साहित्य की मूल शर्त है वहीं इसे बचाना आदिवासी साहित्य आंदोलन का मुख्य ध्येय है। निष्कर्षतः आदिवासी साहित्य आदिवासी दर्शन पर आधारित साहित्यिक आंदोलन है जो आदिवासी परंपरा से अपने तत्व लेता है और 21वीं सदी के पहले

दशक में अकादमिक जगत में अपना अलग साहित्यिक आंदोलन होने का दावा प्रस्तुत करता है। समकालीन आदिवासी लेखन की शुरुआत हमें उदारवाद, बाजारवाद और भूमंडलीकरण के उभार से माननी चाहिए। भारत सरकार की नई आर्थिक नीतियों ने आदिवासी शोषण उत्पीडन की प्रक्रिया तेज की, इसलिए इसका प्रतिरोध भी मुखर हुआ। शोषण और उसके प्रतिरोध का स्वरूप राष्ट्रीय था इसलिए प्रतिरोध से निकली रचनात्मक उर्जा का स्वरूप भी राष्ट्रीय था। आदिवासी अस्मिता और अस्तित्य की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पैदा हुई रचनात्मक ऊर्जा का नाम ही समकालीन आदिवासी साहित्य आंदोलन है। 2015 में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों द्वारा अपनाया गया सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा, वर्तमान और भविष्य में लोगों और ग्रह के लिए शांति और समृद्धि का एक साझा खाका प्रदान करता है। इसके केंद्र में 17 सतत विकास लक्ष्य हैं, जो वैश्विक साझेदारी में विकसित और विकासशील सभी देशों द्वारा कारवाई के लिए एक जरूरी आह्वान है।तेरहवां एसडीजी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करके, जलवायु लचीलेपन को बढ़ाने और जलवायु अनुकूलन प्रयासों का समर्थन करके जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करने पर केंद्रित है। भारत अंतर्राष्ट्रीय जलवायु वार्ता में सक्रिय रूप से शामिल रहा है और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विभिन्न घरेलू पहलों को लागू किया है।''[19]

'आदिवासी विमर्श बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में शुरु हुआ अस्मितामूलक विमर्श है। इसके केंद्र में आदिवासियों के जल ,जंगल, जमीन और जीवन की चिंताएँ हैं। माना जाता है कि 1991 के बाद भारत में शुरु हुए उदारीकरण और मुक्त व्यापार की व्यवस्थाओं ने आदिम काल से संचित आदिवासियों की संपदा के लूट का रास्ता भी खोल दिया। विशाल एवं अत्यंत शक्तिशाली बहुराष्ट्रीय एवं देशी कंपनियों ने आदिवासी समाज को उनके जल, जंगल और

जमीनों से बेदखल कर दिया। इसने आदिवासी इलाकों में बड़े पैमाने पर विस्थापन को जन्म दिया। बड़ी संख्या में झारखंड, छत्तीसगढ़, दार्जिलिंग, आदि इलाकों से लोग बड़े महानगरों जैसे दिल्ली, कोलकाता आदि में आने को विवश हुए। इन आदिवासी लोगों के पास न धन था, न ही आधुनिक शिक्षा थी। शहरों में ये दिहाड़ी मजदूर या घरेलु नौकर बनने को बाध्य हुए। विशालकाय महानगरों ने इनकी संस्कृति, लोकगीतों और साहित्य को भी निगल लिया। नई पीढ़ी के कुछ आदिवासियों ने शिक्षा हासिल की और अवसरों का लाभ उठाकर सामर्थ्य अर्जित किया। उन्होंने सचेत रूप से अपने समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक हितों की रक्षा के लिए आवाज़ उठाना आरंभ किया। उन्होंने संगठन भी बनाए। आदिवासियों ने अपने लिए इतिहास की नए सिरे से तलाश की। उन्होंने अपने नेताओं की पहचान की। अपने लिए नेतृत्व का निर्माण किया। साथ ही समर्थ आदिवासी साहित्य को जन्म दिया। प्रतिरोध अस्मितामूलक साहित्य की मुख्य विशेषता है। आदिवासी विमर्श भी आदिवासी अस्मिता की पहचान, उसके अस्तित्व संबंधी संकटों और उसके खिलाफ़ जारी प्रतिरोध का साहित्य है। यह देश के मूल निवासियों के वंशजों के प्रति भेदभाव का विरोधी है। यह जल, जंगल, जमीन और जीवन की रक्षा के लिए आदिवासियों के 'आत्मनिर्णय' के अधिकार की माँग करता है।'[20]

57

3.7)निष्कर्ष

इस अध्याय में आदिवासी शब्द का अर्थ ,स्वरूप, आदिवासी शब्द की परिभाषा ,आदिवासियों के जीवन शैली, आदिवासियों के लिए भारतीय संविधान तथा विश्व स्तर पर दिया गया स्थान ,इत्यादि विषयों पर लेखन कार्य किया गया है। आदिवासियों के प्रति गैर आदिवासी लोगों की गलत धारणाएँ रूढ़ हुई है। आदिवासी अपनी संस्कृति बचाने का कार्य निरंतर करते आए है, जिन्हे असभ्य कहा गया जाता है। अनुज लुगुन का कहना गई कि गैर आदिवासी में सामूहिकता और सहजीविता के तत्व का अभाव और वर्चस्व की धारा में अपने आप को प्रवाहित करने की इच्छा ही आदिवासियों को सम्मिलित न करने का कारण हो सकता है।

3.8)संदर्भ सूची

संदर्भ ग्रंथ

1. https://vivekresearchjournal.org/current_issue/nmarch23/Jan.,%20 2023-102-105.pdf
2. वहीं
3. वहीं
4. वहीं
5. https://ln.run/LqUlk
6. https://vivekresearchjournal.org/current_issue/nmarch23/Jan.,%20 2023-102-105.pdf
7. वहीं
8. वहीं
9. वहीं
10. चौरे नारायण, आदिवासियों के घोटुल,विश्वभरती प्रकाशन,तृतीय संस्करण 2010,नागपुर–440012
11. वहीं
12. वही
13. https://ln.run/q61-j
14. https://books.google.com/books/about/Encyclopaedia_of_Scheduled_Tribes_in_Jha.html?id=W5dVaq4_cLoC

15. भारत का संविधान,विधि और न्याय मंत्रालय , नयी दिल्ली

16. https://thefollowup.in/jharkhand

17. https://www.google.com/amp/s/www.jansatta.com/politics/tribal-life-and-culture-at-risk-jansatta-article/733495/lite/

18. https://ln.run/3bLS4

19. https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/82741

20. https://ln.run/HtA6Q

सहायक ग्रंथ

शोध प्रबंध

- लुगुन अनुज,मुंडारी आदिवासी गीतों में जीवन राग एवं आदिम आकांक्षाएँ,बनारस हिंदू विश्वविद्यालय,2014

अंतरजाल पर उपलब्ध सामग्री

- https://www.gkexams.com/ask/11130-Aadiwasi-Samvidhan
- भारत का संविधान,विधि और न्याय मंत्रालय , नयी दिल्ली

60

चतुर्थ अध्याय :

अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी प्रश्न

4) अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी प्रश्न

4.1)प्रस्तावना

आदिवासियों की कई समस्याएँ होती हैं, जिनका समाधान निकालना अनिवार्य है।इसका मुख्य कारण यह हैं कि उन्हें शोषण का समाना करना पड़ता है। आदिवासी कवि अनुज लुगुन ऐसे अनेक प्रश्नों को अपनी कविताओं में व्यक्त करते हुए नज़र आते है।

अनुज लुगुन अपनी कविताओं में समसामयिक राजनीतिक घटनाओं, सरकारी नीतियों और जनपक्षधर आंदोलनों के बारे में लिखते है।उनकी कविताओं से लोकतंत्र की दशा-दिशा के संदर्भ में कवि के बौद्धिक आत्मसंघर्ष के बारे में पता चलता है।अनुज लुगून स्वयं की आपबीती को व्यक्त करते है।वे आदिवासी होने के बावजूद गैर– आदिवासियों के बीच रह रहे है । उन्होंने अपनी कविताओं में अपने अनुभवों के बारे में भी बताया है।

4.2) राजनीतिक

अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासियों की राजनीतिक समस्याएँ आयी हैं। कविता में कहा गया है कि, गैर आदिवासी पहले जंगल को जलाते हैं, उन्हें मार डालते हैं और यह श्रृंखला ऐसी ही चलती रहती है। जब वे खोज करते हैं तब उन्हें जीवाश्म मिलते हैं, जिसे खोजकर वे खुश हो जाते हैं। परंतु सत्य यह है कि उन्होंने ही कई हत्याएँ कर के उनका नामोनिशान खत्म करने का प्रयास किया है।

'पहले वे जंगलों को जलाते हैं

फिर उसके जीवाश्म से

अपने चेहरे चमकाते हैं '(पृष्ठ संख्या–16,पत्थलगड़ी)

जीवन के कुछ नियम होते हैं पर वे नियम के साथ नहीं आते। वे कानून का पालन नहीं करते। आदिवासियों का जीना मुश्किल कर देते हैं। बाहरी लोग आदिवासियों में डर फैलाना चाहते हैं। उसे स्थायी बनाना चाहते हैं ताकि आदिवासियों का अस्तित्व मिट जाएँ और वे मुक्त न हो पाएँ। अगर आदिवासी अपने हक के लिए आवाज़ उठाए और लड़ें ,अपना क्षेत्र छोड़कर आगे न बढ़ें, तो गैर आदिवासियों के शोषण में बाधा बन सकते हैं और उनका जंगलों पर हुक्म चलाना भी खत्म हो सकता है। सत्ताधारी लोग अपनी ताकत अपनी वर्दी के सहारे दर्शाते हैं। वे मानवता को जैसे शोषण करने वाली सत्ता में परिवर्तित करना चाहते हैं ।वे जंगलों से मैदानों में फैलते हैं। फिर मैदानों से मोहल्लों में और मोहल्लों से चौंक– चौराहों में घुस जाते हैं।वे धीरे– धीरे पूरे जंगल को काबू करते हैं। खुले आम शासन करके सभी में खौफ़ फैलाते हैं। आदिवासियों का जीवन तहस नहस कर देते हैं।आदिवासियों तथा जंगल और उनकी सभ्यता

को वे मार डालने का प्रयास करते हैं ।इससे सभ्यता और जंगल नष्ट हो सकता है। वे देश को सिर्फ राजनीतिक सीमा तक का नक्शा मानते हैं । उनका राष्ट्र से प्रेम नहीं होता सिर्फ़ नाममात्र का देश प्रेम होता है। वे राष्ट्र को धर्म या जाति से जोड़ते हैं ।जैसे भारत को हिंदू राष्ट्र मानते हैं। पाकिस्तान को मुस्लिम राष्ट्र मानते हैं।उनकी सब साजिशें सामने से नहीं दिखती ।वे ऊपरी तौर पर आदर्श से भरी बातें करते हैं ।परन्तु उनका सत्य कार्य में नज़र आता है। वे बड़ी– बड़ी बातें करते हैं, कि भारत एक है। पर यहीं लोग आदिवासियों को भारत का भिन्न भाग समझकर उनपर शोषण करते हैं। उनके मकान जलाते हैं ।इससे उनकी भावनाएँ कितनी साफ़ तथा सत्य हैं इसका पता चलता है। जंगलों को खत्म करते हुए उनके हाथ में किताबें होती हैं। वे ज़मीन को बंजर बनाते हैं। वे सबके सामने आते हैं तो देशभक्ति के बारे में बड़ी–बड़ी आदर्श भरी बातें करते हैं।

'आधी रात की कविता' इस कविता में कवि उन सत्ताधारी लोगों के बारे में कहते हैं जो गैर आदिवासी हैं । वे पहले जंगलों को जलाते हैं, उसका नामोंनिशान खत्म करते हैं और फिर उसी के जीवाश्म बनते हैं, उसी को खोजकर निकालते हैं और बाद में वे सिद्ध करते हैं कि, उन्होंने बहुत बड़ा काम किया है । सत्ताधारी समाज पूरी दुनिया को अपनी मुट्ठी में करना चाहते हैं और जो आदिवासी हैं, जो असली कलाकार हैं, उनको अंधेरे में धकेल दिया जाता है। वे नियम का पालन नहीं करते, किसी कोट, कचहरी या सचिवालय से ऑर्डर लेकर नहीं आते। वे मन मर्ज़ी करते हैं। वे आदिवासियों में डर पैदा करना चाहते हैं । वे उन्हें वर्दी का डर दिखाते हैं। जिसमें कोई मानवता नज़र नहीं आती है और तब वो उस जंगल पर राज़ करते हैं। अगर किसी ने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने की कोशिश की तो उनको भी मारा जाता है। वे इस देश को एक नक्शा मात्र मानते हैं जिसमें भावनाएँ नहीं होती है, एकता का एकता की

भावना नहीं होती है, प्रेम की भावना नहीं होती है। वे सिर्फ़ इसे धर्म जाति से ही जोड़ते हैं। धर्म जाति के नाम पर दंगे करवातें हैं। वे विकास के नाम पर जंगलों का खात्मा करते हैं। वे खुदके देशभक्त होने का दिखावा करते हैं, एकता में विश्वास रखते है। परंतु ऐसा नहीं होता है।वे निरंतर दूसरे देश को नीचा दिखाने की कोशिश करते रहते हैं। उनमें दोगलापन नज़र आता है।

'गुरिल्ले का आत्मकथन' इस कविता में सत्ता उन्हें युद्ध करने के लिए किस तरह प्रवृत्त करती है यह दर्शाया गया है। यह युद्ध संपत्ति की लालच में नही बल्कि उनके जीवन को बचाने के लिए होता है। कवि उनके समस्या का समाधान खोजने वालो की खोज में है। वे साहित्य तथा मीडिया से भी आशा रखते है कि, वे भी इसमें अपना सहयोग दें।वे राष्ट्राध्यक्ष पर भी व्यंग करते है कि उन्हीं के कहने पर युद्ध होते हैं। अखबारों में भी सच्ची खबरों से ज़्यादा विज्ञापन होते हैं, जो पैसे कमाने में व्यस्त हैं और वे इन सारी समस्याओं को हल्के में लेकर , मज़ाक उड़ते हैं।वे उन्हें आदिमता की काली दुनिया कहकर संबोधित करते हैं। कोई उनकी समस्याओं को नहीं समझता।बल्कि उन्हें धर्म से जोड़ते है। वे जीवन और पर्यावरण को अलग मानते हैं। कवि उनके स्वजनों, साथियों को जंगल में मिलने के लिए कहते है। वे खुद की रक्षा के लिए खुद लड़ते है। इस तरह से वे सबको एकत्रित करके समस्या का समाना करने के लिए आव्हान देते है।

जन हित से अधिक मुनाफाखोरी बढ़ गई है। कई नीतियाँ बनती है जिसके बारे में बताकर वे अपनी सत्ता बढाते हैं।कुछ किलो अनाज या सामग्री के वितरण को ही कल्याणकारी योजना बताकर सरकार आदिवासियों का मत लेती है। फिर उन्हें मुड़कर भी नहीं देखा जाता।

65

जब कोई अपने अस्तित्व या पर्यावरण की रक्षा के लिए आवाज़ उठाते हैं तो उन्हें आतंकी और देशद्रोही का नाम दिया जाता हैं। कवि ने बहुत सोच समझकर राजनीतिक कविताओं को शीर्षक तय किया है। जैसे– 'नागरिकता के सीमांतो पर खड़े लोग', 'मजदूरों की मौत का सदमा लाल किले को नहीं होता', 'लाल कार्ड', 'मेरे गाँव में सीआरपीएफ कैम्प लग गया है' आदि राजनीति पर किए गए व्यंग परक कविताएँ हैं।अपनी एक कविता में अनुज लुगुन लिखते हैं–

"मैंने अपनी वफादारी नहीं चुनी है

अनाज के गोदामों के लिए

कविता की उस भाषा के लिए भी नहीं

जो किसी भूखे की कब्र पर राष्ट्रगान के लिए खड़ी हो।"

(पृ. संख्या–32,पत्थलगड़ी)

आदिवासियों को दुख हैं कि उनकी पत्नी और बच्चे मुठभेड़ में मारे गए हैं और उन्हें इस बात का भी दुःख है कि दोनों गाँवों के बीच गलतफहमियाँ उत्पन्न की जा रही हैं न्यायाधीशों के रास्ते थकाऊ, घुमावदार और अन्तहीन है । कई पीढ़ियों से उनके यहाँ चक्कर काटने का सिलसिला जारी है।

'गेंद की खोज में' इस कविता में गेंद एक प्रतीक के रूप में नज़र आता है। सरकार ने उनकी अधिकांश खुशियाँ ,अधिकार छीन ली हैं। आदिवासियों को अपनी ही ज़मीन पर गैरों

जैसे रहना पड़ रहा है।वे अपने अधिकारों के लिए सरकार से अनुरोध करते हैं, परंतु उनकी अर्ज़ी पूरी नहीं होती। उनकी अर्ज़ी सरकार तक पहुँच ही नहीं पा पाती।

'ग्लोब' यह कविता आदिवासियों के विचारों और अनुभवों को सटीक रूप से व्यक्त करती है। उसके हाथ में कलम होने के बावजूद, उसे मानचित्र पर महान व्यक्तियों की पंक्तियों की बजाय क्रूर शासकों द्वारा खींची गई रेखाओं का सामना करना है।अर्थात राजनेताओं के शोषण का समाना करना पड़ता है। ये रेखाएँ उसके अंतर्निहित दुःख और विरोध को दर्शाती हैं। उन्हें सबका सामना करना ही पड़ता है। इस विशेष अनुभव के माध्यम से, उसकी गर्दन ग्लोब की तरह झुकी हुई है, जिससे उसकी भावनाएँ उभरती हैं।

कवि आदिवासियों के बारे में बात करते है। उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। राजनीति अपना आदर्श दिखाती है पर उन्हें मदत नहीं करती। वे खाने के लिए तरस जाते हैं परन्तु उन्हें खाना नहीं मिलता है। आदिवासी समाज को बाहरी दुनिया ने केवल शोषण दिया है।

4.3) धर्मांतरण

'सरना' यह आदिवासियों का धर्म है,परंतु हमेशा से बाहरी दुनिया ने आदिवासियों पर अपना धर्म थोपने का कार्य किया है।कवि कहते है कि, मूल रूप से आदिवासियों में बाइबल,कुरान,गीता,इत्यादि धर्म ग्रंथ पढ़ना पारंपरिक संस्कृति नहीं है।यह गैर आदिवासियों द्वारा समय के साथ उन पर थोपा गया था।

" हमने कभी बाइबिल पढ़ा

और न ही कभी

कुरान की आयतें दुहराईं"

(पृष्ठ संख्या – 21, पत्थलगड़ी)

उनकी संस्कृति मांदल बजाना,गीत गाना,प्रकृति की रक्षा करना ,आदि है। परंतु उन्हें असभ्य कहा गया। आरक्षण के नाम पर उनका धर्मांतरण किया गया। राजनेता ही जंगलों में धर्म के प्रतीकों को लेकर आ जाते हैं। ' बाघ और सुगना मुंडा की बेटी 'लंबी कविता में भी इस तरह की समस्याएँ दिखाई देती है।हिंदूकरण की प्रक्रिया में हिन्दू धर्म (वर्चस्व की संस्था के अर्थ में) के प्रभाव से आदिवासी समुदाय के व्यक्तियों को मजबूर तो किया जा सकता है परंतु पूरी तरह उनके व्यक्तित्व और रीति-रिवाजों का पालन करने के लिए उन्हें नहीं मिलता। संस्कृतिकरण और हिंदूकरण को एक ही मान कर विश्लेषित किया जाता है। यह हिंदूकरण या धर्मांतरण आदिवासियों के लिए खतरनाक है । इससे उच्च वर्ग का काम आसान हो जाता है। वह उनके ही लोगों को सत्ता का दलाल बनाकर उनका दुरुपयोग करता है। इस तरह आदिवासियों की एकता को टुकड़ों में बाँटा जाता है।

4.4) स्त्री शोषण

आदिवासी स्त्री और गैर आदिवासी स्त्रियों की जीवनशैली और विचारधारा में बहुद हद तक भिन्नता है ,उसी तरह कुछ समानताएँ है।अनुज लुगुन की कविताओं की आदिवासी स्त्री को एक अबला नहीं बल्कि कर्तव्य शील दिखाया गया है, जो पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर समान रूप से काम करती है ।आदिवासी स्त्रियाँ अपनी परंपरा तथा पर्यावरण को बचाने का निरंतर प्रयास करती है। कुछ स्त्रियां बाहरी प्रभाव से खुद को दूर रख रही हैं क्योंकि उन्हें उसका महत्व पता है | उनपर कई शोषण होते हैं। जंगलों में उनपर बलात्कार किया जाता है। उनका अपहरण भी किया जाता है। वे फिर भी अपने परिवार के साथ खड़ी रहती हैं।

4.5) पर्यावरण

'पत्थलगड़ी' इस काव्य संग्रह में आदिवासियों द्वारा पर्यावरणीय प्रश्नों को चित्रित किया गया है।

'बहुत कम बच रहा है ऑक्सीजन' इस कविता में कवि पर्यावरण से जो ऑक्सीजन की मात्रा खत्म होती जा रही है उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि ऑक्सीजन कम हो रहा है इसलिए लोग घर पर नहीं बैठ सकते और न ही मास्क लगाकर घूम सकते हैं ।इसके लिए खुली जगह की ज़रूरत होती है । परंतु हम चारों ओर से बंद होते जा रहे हैं।

69

इतिहास में घटित घटना का उदाहरण देते हुए वे कहते हैं कि, जब हिटलर ने सभी लोगों को गैस चेंबर में दम घुटने के लिए लोगों को वहीं छोड़ दिया था , वहाँ भी ऑक्सीजन की कमी की वजह से लोग मर गए थे। इससे कवि ये कहना चाहते है कि, ऑक्सीजन हमारे लिए बहुत ज़रूरी है। लोग विकास के नाम पर पर्यावरण को नष्ट कर रहे हैं और खुद अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। वे कहते हैं कि जो घटना हुई थी वो एक राजनीतिक घटना थी इस तरह की राजनीतिक घटनाएँ भी ऑक्सीजन की मात्रा कम करने में योगदान देती है इसलिए लालसा और मुनाफ़े के बारे में सोचते हुए विकास को आगे बढ़ाया जाता है, परंतु यह कई लोगों की मृत्यु का कारण हो सकता है और पर्यावरण की बुरी परिस्थिति हो सकती है। यह ऑक्सीजन की कमी सिर्फ एक भारत देश तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह विश्व स्तर पर समस्या है क्योंकि ऑक्सीजन की ज़रूरत हर किसी को होती है। प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि ग्रीन हाउस का उत्सर्जन भी बढ़ गया है। खुद के फायदे के लिए या फिर दूसरे देश को टक्कर देने के लिए जो विकास चल रहा है ,वो नकारात्मक रास्ते पर चल रहा है, जिसकी वजह से प्रदूषण तेज़ी से बढ़ रहा है । प्रकृति नष्ट हो रही है और इसकी वजह से यहाँ सिर्फ एक देश ही नहीं सम्पूर्ण दुनिया खत्म हो सकती है।कंक्रीट से दबी पगडंडी की तरह उनका भी जीवन दब कर रह जाता है। कंक्रीट का जंगल अर्थात विकास के नाम पर उनके शोषण के खिलाफ आदिवासी संघर्ष कर हैं।

"बहुत कम बच रहा है ऑक्सीजन

इसका मतलब सिर्फ यह नहीं

कि जंगल कट रहे हैं या ग्रीन हाउस का उत्सर्जन बढ़ गया है

इसे इस तरह भी समझा जाना चाहिए कि

किसी एक आदमी या, किसी एक रंग की

जातीयता और राष्ट्रीयता की बात

अचानक लाखों लोगों को मौत की नींद सुला सकती है।"

(पत्थलगड़ी , पृ .संख्या 28)

आदिवासी, अस्तित्व की लड़ाई में खुद शिकारी से शिकार में परिवर्तित होकर लड़ रहे हैं | उसी तरह उनकी जनसंख्या घट रही है,भूमि से घनत्व घट रहा है , माफ़िया बढ़ रहा है,पेड़ घट रहे हैं ,इसके खिलाफ़ वे लड़ रहे हैं। कुछ आदिवासियों ने सत्ता के बहाव में नई जीवन पद्धति और विचारधारा को अपना लिया है।इस समस्याओं पर कोई नहीं बोलता।उन्हें चिंता नहीं कि जंगल खत्म हो रहे हैं। आरक्षण के नाम पर उनका धर्मांतरण होत है। कुछ लोग उन्हें हिंदू या ईसाई धर्म में परिवर्तित करना चाहते है।'लोग जाए तो कहा जाए?

कटते जंगल में या बढ़ते जंगल में?'

यह सवाल वे सत्ता तथा पाठको पर विचार करने के लिए छोड़ जाते हैं।'चिड़ी',चिड़िमार और बूढ़ी माँ के प्रतीक के माध्यम से वे बताते है कि, आदिवासी तथा पशु–पक्षियों पर वार किया जाता है। आदिवासी उन्हें बचाने का प्रयत्न करते रहते हैं। वे उनकी रक्षा के लिए बंदूके उठाते हैं , जिसमें से वे जंगल को बचाने का प्रयास करते हैं। ज़्यादा मात्रा में खनिज

के निकालने की वजह से उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सहजीविता के इसी संदर्भ में कवि कहते है कि ,

'एक पेड़ से टिकी लतर अपनी देह पर
गिलहरी को उठाकर उसे खिलाती है
कोई पका फल और नदी उकेरती है
यह चित्र अपने सीने में और पहाड़
क्या झुकते नहीं
नदी की आँखों में यह सब झाँकने।'

उनका कहना है कि पर्यावरण भी एक दूसरे को समझता है ,एक दूसरे की ओर झुककर सहानुभूति तथा प्रेम व्यक्त करता है परंतु मानव ऐसा नहीं है।कवि ने पर्यावरण से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान दिया है। ऑक्सीजन की कमी न केवल पर्यावरणिय मुद्दा है, बल्कि इसके आंतरिक और राजनीतिक पहलुओं को भी गहराई से समझना चाहिए। ऑक्सीजन की कमी केवल एक स्तर पर ही नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहराई है जिसे समझना आवश्यक है। विकास के नाम पर जो पर्यावरण की समस्याएँ निर्माण हो रही हैं ,वे एक दिन सबको मार डालेगी।

' चिड़ियाघर में जेब्रा की मौत' कविता, मानवीय असहायता और विनाश की परिभाषा प्रस्तुत करती है। जेब्रा के साथी के सिर्फ़ प्रजनन के उद्देश्य से रखे जाने का संदेश उसके

72

अकेलेपन और अजनबीपन को बढ़ाता है। जेब्रा की मौत के बाद, कवि अपने संघ के गुज़ारे हुए समय को याद करता है, जब जेब्रा खुद को खुले मैदान में पाता था।कवि का दुख जेब्रा के साथी की मौत के साथ ही चिड़ियाघर के भयानक पिंजरों की बढ़ती संख्या के बारे में है।प्राणियों को चिड़ियाघर में कैद किया जाता है। उन्हें प्राकृतिक पर्यावरण से दूर कर, पिंजरे में रखा जाता है। उनकी मृत्यु के बाद लोगों पर कोई असर नहीं होता। परन्तु अगर वही आदिवासी लोग होते तो उनकी मौत में शोक मनाते, गीत गाते, नृत्य करते, सहानुभूति जताते। यह आदिवासी जीवन शैली है। वे सहजीविता में विश्वास रखते हैं। इस कविता को दूसरी नज़र से भी देखा जा सकता है ।आदिवासियों को कवि ने जेब्रा का प्रतीक के रूप में भी स्थापित किया होगा। जेब्रा की तरह आदिवासियों का जीवन भी कैदियों की तरह बन गया है। उनके होने या ना होने से किसी को कोई फ़र्क नही पड़ता है। सिर्फ़ उनके प्रियजन ही उनकी भावनाएँ समझ पाते हैं।प्राकृतिक संसाधनों से आदिवासियों को वंचित रखने की साज़िश चलती रहती हैं।

4.6) आदिवासी. इतिहास लेखन

संथाल विद्रोह, अंग्रेज़, जमींदार और सामंतवादियों के क्रूर नीतियों तथा शोषण के विरुद्ध पूर्वी भारत में (झारखण्ड और पश्चिम बंगाल) एक विद्रोह था।यह 1855 से 1856 तक चलता रहा।इसके बाद 1987 का संग्राम चला। यह कविता संथाल लोगों के इतिहास, संघर्ष, और आज़ादी की कहानी को सुनाती है। इसमें संथाल लोगों के संघर्ष की कठिनाई और उनके आत्मसम्मान की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनकी आज़ादी का अर्थ और महत्व उनके संघर्षों, समर्पण, और साहस के साथ प्रस्तुत किया गया है। वे समय के साथ बदलते हैं लेकिन उनकी

आवाज़ और संदेश हमेशा सच्चे और प्रेरणादायक रहते हैं। इस कविता में संथाल लोगों की सामूहिक और व्यक्तिगत विजय की गाथा रची गई है, जो उनके साहस और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।कवि के लिए आज का 'बाघ' कई रूपों में चुनौती पेश कर रहा है। वह आदिवासियों के इतिहास और समाज के लोगों को ही प्रभावित कर रहा है। वह इतिहासकार बनकर उनके इतिहास को पितृसत्तात्मक, और ईश्वरीय बना रहा है। इसके जरिये वह समाज के स्त्री-पुरुष संबंधों, समाज और व्यक्ति के संबंधों में एक ग़लत धारणा का निर्माण कर रहा है।गैर–आदिवासियों की विचारधाराओं को आदिवासियों पर थोपने का प्रयास हो रहा है। ऐसा केवल भारत में नहीं है बल्कि दुनियाभर के आदिवासियों के साथ हो रहा है। दुनियाभर के आदिवासी रचनाकार इसके प्रतिरोध में रचनात्मक रूप से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

4.7) अस्तित्व

आदिवासी समाज मुख्य धारा से अलग है।उनकी परंपरा को असभ्य और जंगली माना जाता है। भले ही आर्य के साथ जो संघर्ष हुआ उससे उनकी परिस्थिति काम स्तर पर पहुँच गई।परंतु दोनों शत्रुता के बावजूद एक दूसरे से प्रभावित होकर संस्कृति का विकास करते रहे।

'पत्थलगड़ी' काव्य संग्रह में अस्तित्व के बारे में कवि ने अपने विचार व्यक्त किए है। 'मुख्यधारा' इस कविता में कवि ने मुख्यधारा में जो लोग हैं उन पर व्यंग्य किया है और वे किस तरह से आदिवासियों को असभ्य जंगली कहते हैं यह बताया है।कवि का कहना है कि आदिवासियों के कम बोलने की आदत को गैर आदिवासी दब्बूपन समझते हैं।उन्हें कमजोर

74

समझा जाता है।आदिवासी लोग खुलकर हँसते हैं इसलिए उन्हें अशिष्ट माना जाता है । वे नाचते हैं जिसे वे अपमान मानते हैं । जंगलों में रहते हैं इसलिए उन्हें बर्बर या जंगली कहते हैं | यही आदिवासियों की जीवनशैली है। यही सहजीविता है और इनसानियत में ही वे मानते हैं। वे कहते हैं कि गैर आदिवासियों की दुनिया में अहंकार है ,वे खुद को ही सर्वोच्च मानते हैं। ऐसी आदिवासियों की दुनिया नहीं।

'मेरी वफ़ादारी तुम्हारे लिए नहीं है' इस कविता में कवि कहते हैं कि, जो गैर आदिवासी समाज है उसने पैसों के लालच में भ्रष्टाचार,घोटाला,तस्करी,लूट,इत्यादि कुकर्म करवाया जाता है । कवि सत्ताधारी लोगों की प्रशंसा नहीं करना चाहते। वे गलत का विरोध करते है।ऐसे कई आदिवासी समाज हैं जिन्हें संविधान में दी गई सुविधाएँ नहीं मिल पा रही हैं । कवि मुख्यधारा के विचार के विरुद्ध चलते हैं । भले ही कवि गैर आदिवासियों के बीच रहे हैं फिर भी वे कहते हैं कि वे मेरी वफ़ादारी नहीं निभाएँगे । इसका मुख्य कारण है कि वे जो ग़लत हो रहा है उसके विरोध में आवाज़ उठाने का कार्य भी कर रहे हैं।

किसान धान उगाते हैं और फिर वो गोदामों में इकट्ठा करके रखते हैं जिसके कारण लोगों तक भी वो धान नहीं पहुँचता और किसान के साथ भी इन्साफ़ नहीं होता इसलिए वे कहते हैं कि इस के भी विरुद्ध वो अपनी बात रखते हैं ।

'अल्पसंख्यक' इस कविता में उन्होंने अस्तित्व पर बहुत बातें लिखी हैं। यह किस तरह संघर्ष करते हैं ,उसके बारे में भी लिखा है ।'अल्पसंख्यक' इस कविता में अल्पसंख्यक की व्याख्या करते हैं, जो पहले से चली आई हुई परिभाषा का खंडन करती है । उन्होंने कहा है कि आदिवासियों की संख्या कम है। उन्हें कई पूर्वाग्रहों की वजह से दोयम दर्जा दिया गया है। उन्हें

कला के क्षेत्र में आगे बढ़ने से रोका जाता है। वे अगर अपनी भाषा बोलें तो उसे अपराध माना जाता है। उन पर तमाम शोषण किए जाते हैं। शोषण की संख्या इतनी बड़ी है कि उनके सामने जो शोषण है उनकी संख्या कम है।कवि का कहना है कि, धर्म ,जाति,वर्ग रंग इस आधार पर अल्पसंख्यक होना या न होना तय हो सकता है, परंतु अल्पसंख्यक का अर्थ आदिवासी हिंदू या मुसलमान नहीं हो सकता है। वे खुद के लिए लड़ते हैं | इसमें उनका कोई फायदा नहीं होता है, ना ही पैसों का ,ना ही संपत्ति का परंतु अल्पसंख्यक होना एक साहस की बात होती हैं।

आज अस्तित्व का सवाल आदिवासी साहित्य में उभरकर आ रहा है। यह प्रश्न उनकी पहचान से जुड़ा हुआ है। क्योंकि ऐतिहासिक प्रक्रिया से मानव सभ्यता जो यहाँ तक पहुँची है, इस पूरी प्रक्रिया में जो पूँजीवादी विकास का या समाजवादी व्यवस्था का जो चरण उभरकर आया है,इसने आदिवासी समाज का स्तर कम हो गया है । अनुज लुगुन का मानना है कि, जो विकास के नाम पर विस्थापन हो रहे हैं,य जो बाहरी अतिक्रमण हो रहे हैं,वे इसे अंतिम चरण मान रहे हैं। इसके बाद शायद ही आदिवासियों को तथा उनके अस्तित्व को खोजा जा सकता है ।

अनुज लुगुन का मानना है कि ' कोलंबस के नई दुनिया की खोज से वर्चस्व का नया तरीका विकसित हुआ। आगे चलकर वह एक प्रवृत्ति में बदल गया और वह धीरे–धीरे बढ़ते हुए उपनिवेशवाद के रूप में खड़ा होता गया और वह उपनिवेशवाद का विचार पूरी दुनिया में फैल गया ।'[1]

कवि सामाज़िक न्याय और समर्पण की बात करते हैं।वे खुद के अस्तित्व तथा अधिकार के लिए जुलूस निकालते हैं। उनकी बातों से समझना और उनका साथ देना महत्वपूर्ण है,

क्योंकि वे आम लोगों की भावनाओं और आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करते हैं। वे गैर आदिवासियों की तरह अच्छी सुविधाएँ या प्रसिद्धि नहीं चाहते। वे आदिवासियों की जरूरतों को जानते है, इसलिए वे गैरज़रूरी चीज़ों के पीछे नहीं भागते। वे व्यक्ति की नीयत को भी महत्वपूर्ण मानते हैं।

'कानअः रोंआ' इस कविता में 'कानअः' को जंगल का बाघ मार डालता है और उसका बेटा वही रोता रहता है। बेटा उस बाघ को गुस्से से देखता है। यह आदिवासियों में मान्यता है।इसी के साथ तुलना कर के आदिवासियों की समस्या की चर्चा करते हैं। जब रांची एक्सप्रेस ट्रेन गुजरती है तो यात्री आदिवासी लोगों की ओर उपहास की दृष्टि से देखते हैं तब कवि को भी गुस्सा आता है। जैसे कानअः के बेटे को प्राकृतिक बाघ का गुस्सा आ गया था ।

यह कविता एक संघर्षपूर्ण जीवनशैली को दर्शाती है, जहाँ झानू बुआ और उसके भाई रीझवर कठिनाईयों और चुनौतियों का सामना करते हैं, लेकिन उनका साथ देकर वे संघर्षों को पार करते हैं। झानू बुआ की जिम्मेदारी और संघर्ष के दौरान उसके भाई का साथ उसके लिए महत्वपूर्ण होता है।यह कविता संघर्ष और जीवन के मूल्यों को प्रस्तुत करती है, जहाँ झानू बुआ अपनी जिम्मेदारी को पूरा करती है और अपने परिवार के साथ एकजुट रहती है। यह कविता उनके संघर्ष और सामर्थ्य को उजागर करती है।

'बसंत के बारे में कविता' इसमें कवि के विचारों और अनुभवों को प्रकट किया गया है। बसंत के बारे में कविता लिखने के लिए कवि प्रेरित होते है। लेकिन अपने आत्म-विश्वास की कमी के कारण डरते है क्योंकि उनके विचारों का विरोध किया ही जाता है ।कवि अपने विचारों को भावनात्मक रूप से व्यक्त करते है। जब वे असुरक्षितताओं और उत्साह को सामने लाते है। उनकी कविता बसंत के मौसम के साथ उसके व्यक्तिगत अनुभवों का एक नया रूप लेती है, जिससे उनकी कविता की गहराई और समृद्धि बढ़ती है।

'बाघ और सुगना मण्डा की बेटी' कविता में दो बाघ हैं।एक जंगल के 'इस ओर' है और दूसरा जो जंगल के 'उस ओर' है। कवि 'उस ओर' की दुनिया के मिथकों और इतिहास के समानांतर अपने मिथकों और इतिहास का पुनर्व्याख्या करते है। यही वह तरीका है जिससे उनके 'सांस्कृतिक वर्चस्व' को चुनौती दी जा सकती है।

4.8) संस्कृतिकरण

संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्चस्ववादी समूह कमजोर समूह को अपने वर्णाश्रम व्यवस्था में विलय करा लेता है और उसकी मूल पहचान को लगभग समाप्त कर देता है। कविता भी लोककथाओं से प्रेरित होकर अपना आधुनिक और नया संस्करण रचती जाती है। यहाँ कविता में लोककथाओं से अर्जित बौद्धिकता 'संस्कृतिकरण' और 'हिंदूकरण' के प्रतिरोध में है। 'बाघ और सुगना मण्डा की बेटी' कविता में 'बिरसी' को ऐसे ही 'उलटबग्घों' की पहचान करती है अर्थान आदिवासियों को जागृत करने का कार्य करते है।

"थोड़ा और धैर्य

थोड़ा और चिंतन

और वैचारिकता भी चाहिए

इसके बिना कहीं सहयोग नहीं है

कहीं समर्थन नहीं है

हम अधूरे ही होंगे, हम बिखरे हुए होंगे"

('बाघ और सुगना मण्डा की बेटी')

वैचारिक परिपक्वता के लिए कवि वापस बिरसी को वाचिक परंपरा की संस्थाओं और उसके महत्वपूर्ण सिद्धांतों के पास ले जाता है। वह उसे वापस गीतिः ओड़ा, धुमकुड़िया और घोटुल ले जाता है। ये वो संस्थाएँ हैं जहाँ अविवाहित युवक-युवती अपने भविष्य की योजनाएँ भी बनाते हैं और पुरखों की ज्ञान परंपरा को भी अर्जित करते हैं। बाघ और बाघपन के मज़बूत होने का सबसे बड़ा कारण यही है कि उनके अपने समूह के लोग, उनकी पीढ़ियाँ इन संस्थाओं से दूर होती जा रही हैं और उनके दिमाग को पहाड़ी के 'उस पार का बाघ' शोषण कर रहा है। इसे वह विकास का नाम देता है। समावेश की यह प्रक्रिया औपनिवेशिक काल में शुरू हुई और उत्तर औपनिवेशिक काल आते-आते अब आदिवासियों को 'एक्सक्लूजन' के रूप में अपनी जीविका और जीवन के ऊपर नियंत्रण से भी वंचित कर दिया गया है। कवि इस

योजनाबद्ध हमले के वैचारिक प्रतिरोध के लिए वापस अपने पुरखों के पास लौटते है। वे अपने गीतों की परंपरा के पास लौटते है जहाँ वे डोडो वैद्य को पाते है। डोडो वैद्य कह रहे हैं कि -

"हमारे गणतंत्र के आधार गीत हैं

गीतों का ह्रास गणतंत्र का ह्रास है"

('बाघ और सुगना मण्डा की बेटी')

उनका गणतंत्र उत्सवधर्मी है और वह श्रम को आनंद का विषय मानता है। जब कवि कविता लिखता है तो वह सचेत होकर अपने 'गीतों' की ओर वापस लौटता है। क्योंकि उसे पता है कि तथाकथित सभ्य दुनिया के जो सिद्धांत हैं वे अपने स्वार्थ के अनुसार तर्क गढ़ते हैं। वह दुनिया आदिवासियों को भी अपनी संस्कृति से प्रभावित कर रही है।इसलिए आदिवासियों की संस्कृति तथा परंपरा घटती जा रही है।

4.9)पारंपरिक ज्ञान विलुप्त होना

'एकलव्य से संवाद' कविता में एकलव्य ने अपना अंगूठा द्रोणाचार्य को गुरुदक्षिणा के रूप में अर्पित किया था। इससे मिलता जुलता मुंडा आदिवासी हैं, जो तर्जनी और मध्यमिका अंगुली का इस्तमाल तीरंदाजी के लिए करते हैं।आदिवासी सभ्यता दो भागो में विभाजित है,नदी के उस पार और इस पार अर्थात जंगलों में रहने वाले और शहरों की ओर जाने वाले। खुद आदिवासी अपनी परंपरा तथा सभ्यता को छोड़कर चले गए हैं। जो प्रकृति से सरल

जीवन संबंध था,वे पत्तो की सरसराहट से जान जाते थे की पशु आया है और तीर उठाते थे। कविता में बताया गया है कि, 'डुम्बारी बुरु 'जो बिरसा मुंडा (आबा)का युद्ध स्थल है। उनके अद्भुत तीरंदाजी के बारे में भी बताया गया है। मुंडा आदिवासियों ने 'इरगी' के पहाड़ पर जो झारखंड में है वहाँ अपना स्वशासन का झंडा लहराया था। वे एकलव्य के होने का दावा नहीं करते हैं।उनकी ' पत्थलगड़ी' अर्थात पत्थर जिसपर मुंडा के पुरखों के नाम लिखे होते हैं, वहाँ एकलव्य का नाम नहीं मिलता। पर वे महाभारत की कथा से उन्हें जानते हैं। परंतु आदिवासियों में यह मान्यता है। वे आत्मसम्मान के साथ जीना चाहते है।परंतु बाहरी समाज के शोषण तथा दखल अंदाज़ी के कारण यह तीरंदाजी की कला भी विलुप्त हो सकती है।

4.10) अंतरिक बदलाव

'बाघपन' एक प्रवृत्ति तथा विचार धारा है। इनसान के व्यक्तित्व पर उसका व्यक्तिगत स्वार्थ इतना हावी हो जाता है कि 'सामूहिकता' उसे खटकती है। व्यक्तित्व के इस पतनशील रूपांतरण को मुंडा समाज 'चानर-बानर' या 'कुनुईल' के मिथक से अपने पीढ़ियों को अवगत करते आया है। अपने मिथकों की दुनिया से कवि दो काम करते है। पहला,वे मुख्यधारा के नव-साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध एक 'वैकल्पिक आधुनिकता' का प्रस्ताव रखते है जिसका स्रोत वाचिकता है। दूसरा, मिथकों की दुनिया की पुनर्खोज से वे आदिवासी दुनिया के अंतर्विरोधों, मुख्यधारा के प्रभाव में आए आदिवासी 'कुनुईलों' और 'दिकुओं' की पहचान करके अपनी अस्मिता-अस्तित्व के लिए संघर्षरत भी है।कवि जिस 'बाघपन' की बात कर रहे है जो खुद उसके भीतर भी हो सकती है क्योंकि खुद उसकी दुनिया मुख्यधारा से

81

जुड़ा हुआ है। ऐसे में खुद को 'बाघपन' से बचाए रखने के लिए हमेशा आत्मसंघर्ष करना पड़ता है।'सुगना मुंडा की बेटी' उसी आत्मसंघर्ष की उत्पाद है। वह इतिहास और मिथक के द्वंद्व के बीच कवि की अभिव्यक्ति है जो कभी इतिहास की सुनती है और कभी मिथकों से संघर्ष की प्रेरणा पाती है। बाघपन से लड़ने के लिए जरूरी है कि कवि अपने मिथकों की दुनिया से आलोचनात्मक विवेक अर्जित करे। तो सुगना मुंडा अपनी वाचिक परंपरा का निर्वाह करते हुए उसे आने वाले खतरों से आगाह करता है कि–

'यह बाघ के हमले की साजिश है

वह समूह पर हमला नहीं कर सकता

इसके लिए वह पहले शिकार को खदेड़ कर अलग-अलग करता है'

संस्कृति संक्रमण(acculturation) के खतरे के खिलाफ़ कवि को 'पड़हा' से ज्यादा सशक्त प्रतीक और किसी विचारधारा में नहीं मिल पाता। इसलिए कवि अपने ही वाचिक इतिहास की ओर लौटता है। इतिहास में निर्मित संस्थाओं की ओर लौटता है। मुख्यधारा, आदिवासियों को आदिम समय की आदिम संस्था कहकर उपेक्षित करता है। आदिवासी गैर आदिवासियों द्वारा प्रभावित होते नज़र आते हैं। वे अपनी परंपरा को छोड़कर अपनों के ही दुश्मन होते जा रहे हैं।कविता में अतीत से वर्तमान तक कि यह यात्रा औपनिवेशिक संघर्ष से वैश्विक ग्राम के दलालों तक कि यात्रा है।

4.11) भाषा

गैर आदिवासी लोग आदिवासियों की भाषा को नहीं अपनाते बल्कि अपने भाषा तथा जीवन शैली को अपनाने के लिए उन्हें मजबूर करते हैं।उदाहरण के लिए कुछ लोग कुछ आदिवासी शब्दों को जैसे 'कानअः रोंआ' को वे 'कनारोआ' या 'रेंची बुरी' को 'रांची' कहकर अपनी भाषा में लिपिबद्ध करते है और इस तरह आदिवासियों की भाषा ,इतिहास तथा सभ्यता को खत्म करने का प्रयास चल रहा है।

"वे 'कानअ: रोंआ' का उच्चारण नहीं कर सकते

'कानअः रोंआ' की तरह इसे वे 'कानारोंआ' कहेंगे

और एक झटके में सांस्कृतिक धरोहरों की जड़ उखाड़ देंगे

जैसे यह कान और लूल्ले-लँगड़ों की बस्ती हो"

(अघोषित उलगुलान, पृष्ठ संख्या –30)

उनकी भाषाओं की अपनी अर्थ ध्वनियाँ हैं जिसको वे आज तक अनुवाद के जरिये भी समझ नहीं सके हैं। उनकी भाषा को असभ्य की कहकर निम्न दर्जा दिया जाता हैं।उनकी एक कविता में भाषा के संघर्ष के संदर्भ में कहते हैं –

"आज वे उनकी भाषा को

अपनी भाषा में अनुदित करने लगे हैं

83

समसत्ता का पितृसत्तात्मक भाष्य ही

प्रस्तुत किया जाता रहा है उनके सामने

अनुदित भाषा के व्यवहार का ही प्रचलन किया जा रहा है उनमें।"

(पत्थलगड़ी)

कविता में कवि के पास ऐसी स्मृतियों का एक संग्रह है। जिसकी भूमिका में वर्तमान में मुख्यधारा के साथ अपने समाज के आंतरिक संक्रमण के सभ्यता की समीक्षा की गई है। कवि 'बिरसी' को 'रीडा' और 'डोडो वैद्य' से साक्षात्कार करवाता है। ये दोनों पूर्वज आदिवासी ज्ञान परंपरा के प्रतिनिधि हैं। इनसे बिरसी और उसके समकालीन पीढ़ी को वर्तमान की चुनौतियों का ज्ञान और उससे निपटने की योजनाओं का सूत्र प्राप्त होता है। 'रीडा' ही अपने अनुभव से बताते हैं कि वर्तमान समय ज्यादा जटिल है और इससे संघर्ष करने के लिए केवल शारीरिक फुर्ती काफी नहीं है।

4.12) .विस्थापन

कवि इतिहास के सहारे बताने का प्रयास करते है कि, विकास के नाम पर खदान के कारण उन्हें विस्थापित होना पड़ता है ,ऐसे घूम घूम कर एक दिन उनके पास रहने के लिए जगह नहीं बचेगी। पहले उनका गाँव गुवा-नुआमुंडी(सारंडा जंगल के दो गाँव) में था, आज हतना बुरू(सारंडा जंगल के पहाड़) में है कल और किसी पहाड़ में शरणार्थी होंगे ,अगले दिन

किसी और पहाड़ में, इसी तरह एक दिन में फेंक दिए जाएँगे। वर्तमान की स्थिति देखकर कवि भविष्यवाणी करते हैं। विकास के नाम पर उनका शोषण किया जाता है।बड़े बड़े बांध बांधते वक्त जंगल को बड़ी मात्रा में काँटा जाता है। उन्हें वहाँ से हटाया जाता है परंतु उन्हें रहने के लिए अलग स्थान नहीं दिया जाता ।यह एक गंभीर समस्या है।

4.13) नागरिकता

पत्थलगड़ी इस इस काव्य संग्रह में कविने नागरिकता से जुड़ी समस्याओं के बारे में बताया है।

'मुझे मेरी नागरिकता दे दो' इस कविता में कवि नागरिकता की माँग करते हैं।कवि कहते हैं कि उन्हें नागरिकता चाहिए,उनकी अस्मिता वापस चाहिए। सिर्फ़ सुदूर जंगलों में रहने वाली नागरिकता नहीं चाहिए बल्कि उस क्षेत्र के एक अहम हिस्से के रूप में उन्हें नागरिकता चाहिए। उनका धर्म कोई भी हो परंतु उन्हें सम्मिलित नागरिकता चाहिए। एक नागरिक होने के कारण उन्हें रहने के लिए घर ,खाना, शिक्षा , आज़ादी,उनके संसाधनों पर अधिकार और जो संविधान में लिखा हुआ अधिकार है वह भी उन्हें चाहिए ।इस तरह की माँग वे राजनेताओं से करते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें दोयम दर्जा नहीं चाहिए। उन्हें भी मुख्यधारा का हिस्सा बनना है। इनसान हैं तो उन्हें इनसान की तरह ही माना जाना चाहिए | वे भी अपने परिवार के लिए मेहनत करते हैं, खेतों में काम करते हैं। एक नागरिक होने के नाते उन्हें भी सभी की तरह समान रूप से नागरिकता दी जानी चाहिए ।वे कहते हैं कि वे गरीब हैं ,देश के रहिवासी हैं ,इनसान

हैं। संविधान में जो लिखा है उसके हकदार वे भी हैं इसलिए उन्हें उनका हएक दिया जाना चाहिए -

"नागरिकता के सीमांत पर खड़े लोग आपकी तरह

मुस्कुराते हुए आधार कार्ड दिखा नहीं सकते

वे हर चीज को लाँघते हुए

आदमियत के बन्द दरवाजे को तोड़ते हैं। "

यदि कोई भी नागरिक इससे वंचित है तो संविधान की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा होना स्वाभाविक है। संविधान की प्रासंगिकता बनी रहे इसके लिए ज़रूरी है कि जीवन की गरिमा को स्थापित किया जाए। कविता में इसे स्थापित करने के लिए नए बिंबो और प्रतीकों की ज़रूरत पड़ेगी, जो जीवन में सत्ता के प्रतीकों को चुनौती दे। 'गोह की कविता', 'चाँद चौरा का मोची', 'पर्दे से गुम होती स्त्रियाँ' और 'भीमा कोरेगाँव' जीवन की गरिमा के लिए लिखी गई कविताएँ हैं। इनकी कविता नागरिकता के सीमान्तों पर खड़े लोगों की अनदेखी और उनके संघर्षों को बयान करती है। ये लोग अपने अधिकारों से वंचित होते हैं और समाज में विस्तार से असमानता और भेदभाव का सामना करते हैं। उनका जीवन अनिश्चितता और संघर्ष से भरा होता है। यह कविता उनकी संघर्षशीलता और साहस को व्यक्त करती है।बहुसंख्यक लोग उन्हें निम्न दर्जा देते हैं।वे दुनिया भर में हैं। वे खुदकी रक्षा तथा अस्तित्व के कारण हथियारबंद हो जाते हैं। तब सत्ता को उन्हें नागरिकता के पायदान से बेदखल करने का कारण

86

मिलता है।उनके पास आधार कार्ड नहीं होता।जिससे वे अपनी नागरिकता सिद्ध कर सकते हैं।'मुझे मेरी नागरिकता दे दो' इस कविता में कवि कहते हैं कि उन्हें उनकी अस्मिता चाहिए

4.14)कला

आदिवासियों के पास कई कलाएँ होती है,परंतु उनके कला प्रोत्साहन नहीं मिल पता।

वे रंगों को अपनी मुट्ठी में करना चाहते हैं और

कलाकारों को धकेल देते हैं अँधेरे में

(पृ.संख्या–16, पथलगड़ी)

अर्थात जंगल को अपने काबू में करना चाहते हैं और जो आदिवासी कलाकार उन्हें अंधेरे में धकेल देना चाहते हैं।

4.15) मजदूर

'पत्थलगड़ी' इस काव्य संग्रह में मज़दूरों की समस्याओं के बारे में बताया गया है।'55 बरस के मजदूर' इस कविता में कवि ने पैदल चलने वाले मज़दूरों का दर्द व्यक्त किया है। आदिवासी वृद्धावस्था में भी अपना जीवन बिताने के लिए और बच्चों का भविष्य उज्वल बनाने के लिए कठोर परिश्रम करते हैं। इस उम्र तक आदमी अपना घर बना लेता है। समय ठहरता नहीं उम्र भी बीतने लगती है। लोग अपने अतीत के सुख दुख के पलों को याद करते हैं। सिर्फ़ अपने बच्चों के बारे में सोचते हैं। जो सोचते हैं कि पढ़ाई लिखाई करके अपना बच्चा

कुछ बनेगा जिसकी वजह से उनके परिवार में सुख आ जाएगा ।लेकिन कवि मजदूर तथा गरीब लोगों की व्यथा को दर्शाते हैं। वे 55 वर्ष अपने वृद्ध आयु में भी मजदूरी के लिए हजारों मील दूर चलते हैं। उनकी पत्नियों ने भी उनका साथ नहीं छोड़ा हैं । वे बच्चों को भी साथ लेकर चले गए क्योंकि यहाँ किसी छत या संपत्ति के लिए नहीं बल्कि पेड़ का युद्ध है | वे इस युद्ध में अकेले नहीं रह सकते क्योंकि यहाँ हर एक की ज़रूरत है । लोग कुछ जंगलों में ही रह जाए गए और हथियारबंद हो गए। लोग कहते हैं कि इसमें सरकार का दोष है ।सरकार इस से सहमत हैं पर यह उनका दोष पूर्ण तरह से नहीं हैं। उनकी जिम्मेदारी कोई नहीं लेता ।सब एक दूसरे पर आरोप लगाते हैं। समाधान कोई नहीं निकलता। इन विषयों को राजनेता राजनीतिक मुद्दा बनाकर संसद में बहस करते हैं । इसी में लोगों की उम्र निकल जाती है । ऐसी बहसें देख देख कर वे 55 बरस तक पहुँच जाते हैं। आदिवासियों की माँग के बारे में राजनेता कभी जानने का प्रयास नहीं करते ।एक मजदूर को मजदूरी चाहिए होती है ,मुआवज़ा नहीं । उन्हे स्वतंत्रता चाहिए ,वे किसी के नीचे दबकर नहीं रहना चाहते ।वे स्वावलंबी होना चाहते हैं ।इस उम्र में भटकना नहीं चाहते। चिड़िया अपने बच्चों के लिए चुनती है दाना घोंसला बनाती है वैसे ही वे आज अपने बच्चों के भविष्य के लिए काम करते हैं । वे जानते हैं कि भटकने के बाद वापस घर आना है ।वे यह भी जानते हैं कि केवल वायरस अपराधी नहीं है उनके जीवन के लिए उन्हें वापस जंगल में आने या रहने से भी रोका जाता है, पर वे किसी तरह वापस आते हैं।कोयला खदानों में काम करने वालो के शोषण के बारे में भी कहा हुआ है।

"मज़दूरों की मौत का सदमा लालकिले को नहीं होता

न ही संसद की दीवारों पर सूराख होता है

धर्म के सफेद पन्ने भी नम नहीं होते

ईश्वर की ऐय्याशी फिर भी कम नहीं होती"

(पृ .संख्या – 36, पत्थलगड़ी)

'मजदूर की मौत का सदमा लाल किले को नहीं होता' इस कविता में कवि ने उच्चवर्गीय पूँजीपतियों पर व्यंग्य किया है।लाल किला पूँजीवादी सत्ताधारी वर्ग के लिए एक प्रतीक है ।वे कहते हैं मज़दूरों को जो समस्या होती है, उसे उच्च जाती ,सत्ताधारी या जो पूँजीवादी लोग हैं उन पर कोई असर नहीं होता । धर्म की बड़ी बड़ी बातें करनेवालों को भी इन मज़दूरों के दर्द का अहसास नहीं होता है। रेल गाड़ी की पटरी बनाते वक्त कई मज़दूरों की जान चली जाती है। उसका भी किसी को फ़र्क नहीं पड़ता। विज्ञापनों में भूख के बारे में तथा उनकी समस्याओं के बारे में दिखाया जाता है ,परंतु न्यूज़ चैनलों पर इस तरह की समस्याएँ कम दिखाई देती हैं। कारखानों के मज़दूरों के बारे में कहते हुए उन्होंने लिखा है कि जब मजदूर वहाँ काम करते हैं । कार्य पूर्ण होता है। परन्तु उनका जीवन मुश्किल हो जाता है | उसमें भी पूँजीवादी लोग अपना मुनाफ़ा देखते हैं और इसका परिणाम मज़दूरों पर होता है | खेत में भी जो मजदूर काम करते हैं और धान उगाते हैं ,उनसे भी धान लेकर गोदामों में एकत्रित कर देते हैं। जिससे वे काला धंधा करते हैं । परंतु लोगों तक नहीं पहुँचाते । इसी कालाबाज़ारी से या फिर रिश्वतखोर से जो मुनाफ़ा होता है और पैसे मिलते हैं उससे वे खुद की संपत्ति को बढ़ाते हैं । रिश्वतखोर इतनी बढ़ी है कि उसके सामने मानवता का नामोनिशान नहीं दिखता । सभी रिश्वत लेते हैं और इसका शिकार मजदूर वर्ग बनते हैं ।

कई गाँवों के लोगों को बंधुआ मजदूर बनाया जाता है या बेगारी के कार्य में ढकेल दिया जाता है।सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार बढ़ता है और वह हर स्तर तक पहुँच जाता है ।जिसका प्रभाव मज़दूरों पर ही पड़ता है।

भूख की वजह से कई मजदूर अपनी जान देते हैं और जिसका प्रभाव किसी पर भी नहीं पड़ता क्योंकि उनका दर्द सत्ताधारी लोग नहीं समझ पाते।उनकी मृत्यु के बाद ही कुछ हलचल होती है ,उसका समाधान निकालने की कोशिश करते हैं परंतु वह भी एक दिखावा होता है। सिर्फ़ वह कुछ ही दिनों के लिए होता है। इस तरह कविता में कवि ने अनेक प्रतीकों का इस्तेमाल किया है।

आदिवासियों के पूर्वजों को इसी लिखित भाषा के 'बॉन्ड'ने 'बंधुआ मजदूर' बनाया और आज भी उनकी जमीनें इसी तरह छीनी जा रही हैं।

4.16) शिक्षा

आदिवासी शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े होने की सबसे बड़ी वजह है सांस्कृतिक भिन्नता तथा आर्थिक कमजोरी | सांस्कृतिक भिन्नता के बारे में अगर कहा जाए तो गैर आदिवासी लोगों में आदिवासियों के बारे में गलत धारणाएँ तथा पूर्वाग्रह हैं ।उनके लिए आदिवासी लोग पिछड़े हैं, असभ्य हैं, जंगली हैं, उनकी संस्कृति, उनका व्यवहार, खान पान रहन-सहन, पिछड़ा हुआ है। यह मुख्य धारा के लोगों की मानसिकता है। सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण संवैधानिक संस्था आदिवासी समाज को जोड़ नहीं पाया। दूसरी वजह है आर्थिक पिछड़ापन। इसकी वजह यह है कि अलग संस्कृति होने से एवं अलग जीवन शैली होने के कारण उनकी

अर्थ व्यवस्था अलग रही है, वह संस्था प्रकृति पर आधारित रही है। परंतु जब अंग्रेज आए, आदिवासियों पर राज करने लगे , जब अंग्रेजों ने ज़मीन व्यवस्था बदली तो इसका प्रभाव बड़े पैमाने पर आदिवासियों पर पड़ा। जंगलों पर आदिवासियों को घुसने से प्रतिबंधित कर दिया गया । यह ऐतिहासिक कारण बनी आदिवासियों के पिछड़ेपन की। इसलिए 1857 से अंग्रेज़ों के खिलाफ अनेक विद्रोह हुए।इसके के बाद जो आंदोलन या विद्रोह हुए खासतौर पर 1999 में बिरसा मुंडा का जो विद्रोह हुआ, यह एक आखरी महा आंदोलन था | जहाँ अंग्रेज़ों ने आदिवासियों का दमन किया। उसके बाद से आदिवासी समाज पलायन करने लगे | कोई असम और पश्चिम बंगाल के चाय बागानों में चले गए। इस तरह से वह अलग-अलग जगह पर बँट गए। अनुज लुगुन का कहना है कि अगर यह सांस्कृतिक - आर्थिक विभिन्नताएँ कम हो तो इन समस्याओं का सामना किया जा सकता है । तभी आदिवासी समाज शिक्षा से जुड़ सकेंगे | शिक्षा ना मिलना एक अभिशाप है। आदिवासी समाज को अगर मजबूत करना है तो उन्हें शिक्षा से जोड़ना ही पड़ेगा। चूंकि, आदिवासी बच्चों को ऐसी भाषा में पढ़ाया जाता है जो उनकी मातृभाषा नहीं है और जो उनके लिए नई भाषा है। इसलिए बच्चों का विद्यालय छोड़ना ज्यादा है और साक्षरता दर कम है। संविधान का अनुच्छेद 350 राज्य को यह अधिकार देता है कि वह भाषाई अल्पसंख्यक समूहों से संबंधित बच्चों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधाएं प्रदान करे। यद्यपि आदिवासी अपनी मातृभाषा में शिक्षा के हकदार है लेकिन उन्हें ऐसी सुविधा प्रदान नहीं की गई है यहां तक कि प्राथमिक विद्यालय के स्तर पर भी नहीं।

4.17) गरीबी

'पत्थलगड़ी' इस काव्य संग्रह में कवि आदिवासियों की गरीबी पर भी विचार व्यक्त किए हैं।

" पहचान-पत्र के

कोई काम नहीं होता है

भूख को भी

चाहिए होता है एक कार्ड"

(पृ. संख्या - 3 3 'पत्थलगड़ी)

'लाल कार्ड' इस कविता में कवि आदिवासियों की गरीबी के बारे में बात करते हैं,उन्हें लाल राशन कार्ड दिया जाता है। जो गरीबी रेखा के नीचे है। यह उनका पहचान पत्र है। इस तरह वे पहचान पत्र पर व्यंग्य करते हैं । वे कहते हैं कि भूख के भी अलग-अलग पहचान पत्र होते हैं।

4.18)शहरीकरण

आजकल आदिवासी समाज को मुख्यधारा में लाने के लिए उनको बनवासी बनाया जा रहा है एवं कई तरीकों के प्रलोभन देकर उनको शहरीकरण से जोड़ा जा रहा है ताकि वह आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि आदि के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों का खरीददार बन सकें और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को कमा कर दे सकें। किसी भी देश का आदिवासी ही मुख्य होता है जो

92

सदियों पुरानी सभ्यता और संस्कृति को अपने जीवन से जोड़ कर रखता है और पीढियों से प्राप्त ज्ञान को आगे तक ले जाता है। हमने उनको जानने और समझने के बजाय उनको ही खत्म करने की फुलप्रूफ कोशिश करना चालू कर दी है। आदिवासी समाज जिनके अपनी एक जीवन शैली थी और जो प्राकृतिक रूप से आधारित अपनी नियम कानूनों पर रहता था, अब उसे भी उपभोक्तावाद से जोड़ा जा रहा है ताकि सरकारें उनको सुविधाओं के नाम से छल सके और उनके जल जंगल जमीन और उसकी उपज को छीन करके अपना और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अधिकार स्थापित कर सकें। वर्तमान में कई जातियां जैसे कि ओबीसी, एससी, सवर्ण समाज के कुछ समुदाय, मुस्लिम वर्ग आदि वर्तमान की सत्ता से नाखुश हैं और उनके विरोध में जाकर अपना प्रदर्शन कई तरीके से कर रही हैं। अतः वर्तमान की सत्ता इन भोले-भाले आदिवासियों का उपयोग वोट बैंक के तौर पर और उसकी मजबूती के लिए करना चाह रहे हैं। इन सबके बाद भी सरकार का जी नहीं भर रहा है तो वह विपक्ष के आदिवासी नेताओं पर कई तरीके के आरोप लगाकर के उन को मानसिक रूप से परेशान कर रही है। उनको इतना अधिक परेशान किया जा रहा है कि या तो वह अपना राजनीतिक जीवन खत्म कर दें या उनकी पार्टी में जाकर शामिल हो जाएं। कितना अधिक गिर गई है ना सत्ता अपने वोट बैंक के लिए और सम्राट बनने के लिए। सरकार के अंतिम उपभोक्ता तक सुविधाएं देने की साजिश से लगता यही है कि उनको एक इंसान नहीं सिर्फ एक उपभोक्ता के रूप में देखा जा रहा है। समान जीवन शैली की बादशाहत हो रही है जिससे हमारे प्राकृतिक संसाधनों का अभाव होता जा रहा है और हम विदेशों से आयातित या कम्पनियों द्वारा निर्मित उत्पादों पर आश्रित होते जा रहे हैं।।

93

4.19)उपनिवेशवाद

आदिवासी समुदाय हमेशा से भारतीय महाद्वीप का एक बड़ा हिस्सा रहा है। वे जंगलों की देखभाल के लिए जिम्मेदार थे और जंगल जनजाति के लिए भोजन के एक बड़े प्रदाता थे। लेकिन औपनिवेशिक शासकों के भारत आने के बाद यह समीकरण बेहद बिगड़ गया। ब्रिटिश शासन के दौरान आदिवासी समूहों ने अपने जीवन में भारी बदलाव का अनुभव किया। उन्होंने जनजातीय समुदायों की संरचना बदल दी और उनके व्यवसाय भी बदल दिये।

उन्होंने जनजातीय जीवन को अपने लाभ के लिए उपयोग करने का प्रावधान करने का प्रयास किया। इसके अलावा, वे चाहते थे कि सभी जनजातियाँ एक स्थान पर चले जाएँ ताकि औपनिवेशिक शासकों को जनजाति पर आसानी से नियंत्रण करने में मदद मिलेगी। शासकों ने आदिवासी मुखियाओं को भी प्रभावित किया।

यह लेख आदिवासी प्रमुखों की स्थिति, स्थानांतरित खेती, वन कानूनों, आदिवासी समुदाय पर उनके प्रभाव और आदिवासियों के लिए काम की तलाश पर उनके प्रभाव के साथ-साथ व्यापार में बदलाव के तरीके की जानकारी देता है।औपनिवेशिक शासकों को समूहों का बाहर जाकर खानाबदोशों की तरह रहना पसंद नहीं था। उन्होंने जनजातीय समूहों को एक निश्चित स्थान पर बसने और एक निश्चित घर रखने की सलाह दी। जनजातियों को खेती शुरू करने की भी सलाह दी गई। इससे अंग्रेजों के लिए उन पर नियंत्रण और प्रशासन करना आसान हो गया।

जनजातियाँ आमतौर पर अधिक धन संसाधनों की तलाश में थीं और इसलिए उनमें से कुछ किसान कृषक के रूप में जीवन जीने के लिए सहमत हुए।

95

4.20)निष्कर्ष

किसी कविता की सार्थकता इसमें है कि वह सामान्य पाठक को अपनी बात, कविता के बिंबों-प्रतीकों के माध्यम से विचार करने के लिए मजबूर करे। अनुज लुगुन की लंबी कविता के माध्यम से आदिवासी दुनिया में घट रही घटनाओं तथा समस्याओं से हम परिचित होते हैं। कविता खत्म होते ही पाठक महसूस करता है कि वह एक दुनिया से दूसरी दुनिया में आ गया है जिसके लिए आदिवासी समाज में 'अहद सिंग' के पौधे की मिथकीय कथा है। इस पौधे पर पैर रखने से व्यक्ति दूसरी दुनिया में चला जाता है। कवि का उद्देश्य सामान्य पाठक को अपनी दुनिया से जोड़ना है ।उसी तरह आदिवासी और गैर आदिवासियों के बीच एक संबंध को बढ़ावा देना है, जिससे सहजीविता मजबूत हो।

अनुज लुगुन के काव्य में राजनीति,धर्मांतरण,स्त्री शोषण, पर्यावरण,अस्तित्व की समस्या,इतिहास लेखन की समस्या,आदिवासी भाषा,तथा नागरिकता का प्रश्न इत्यादि समस्याएँ नज़र आती हैं । कविता में जब कोई आलोचक पाठक के रूप में खुद शामिल होता है तो उसे कविता से पहले मिथकों की दुनिया को समझना पड़ता है। इस प्रक्रिया से बाहर आते ही फिर कविता का विचार उसे बांधने लगता है। अनुज लुगुन की कविता आदिवासी चिंतन और विचार का विलक्षण काव्यान्तरण है। हिंदी भाषी समाज और साहित्य में आदिवासी मुद्दे और संस्कृति की सर्जनात्मक घुसपैठ है। इस तरह से हिंदी कविता भी समृद्ध हो रही है।यह 'संबद्धता' दो तरह के विचार के साथआती है ,पहला, जो भी आदिवासियत के विचार को अपनाते हुए 'साहसी प्रतिबद्धता' के साथ आदिवासियों से जुड़ेगा वह उसका सहधर्मी होगा जिसके लिए कवि कहते है कि,

"हमें तादाद के लिए नहीं

सहजीविता के लिए

अपने सहधर्मियों की खोज करनी होगी"

दूसरा विचार आदिवासी समूह के लिए है, कि उन्हें अपनी अस्मिता-अस्तित्व के लिए संघर्ष करना है तो सबको बिरसी की तरह बनना होगा और अपने पुरखों के 'आदिवासी गणतंत्र' में एकत्रित होकर नियमित संवाद करना होगा। अनुज लुगुन अपनी कविताओं के माध्यम से यही करने का न्योता दे रहे है।

4.21)संदर्भ सूची

संदर्भ ग्रंथ

1–लुगुन अनुज, पत्थलगड़ी,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण–2021

98

पंचम अध्याय : निष्कर्ष

99

5)निष्कर्ष

समाज में शोषित तथा शोषक जैसे दो वर्ग हैं। का निर्माण होता हैं।एक ओर शोषक वर्ग, जो खुदके हित के लिए और दूसरों पर वर्चस्व पाने के लिए हमेशा से गरीब या असहाय लोगों पर अपना अधिकार जमाता है। दूसरी ओर शोषित वर्ग है जो निरंतर अपने अधिकार और अस्तित्व के लिए संघर्ष करते रहते हैं। आदिवासी समाज ऐसा ही है, जो बरसों से शोषण का पात्र बना है।आदिवासी अपने अधिकार तथा अस्तित्व की लड़ाई लड़ते आ रहे है।बाबूराव सेडमाके ,बिरसा मुंडा,सिदो मुर्म,कान्हू मुर्म, टंट्या भिल्ल, तिलका माँझी,सुरेंद्र साए, सिनगी दई ,इत्यादि सेनानियों ने शोषण की खिलाफ़ आवाज़ उठाई ।परिणाम स्वरूप हूल विद्रोह,कोल विद्रोह, जैसे कई विद्रोह हुए।अब आदिवासी समाज को विद्रोह का महत्व समझ आ गया है। विद्रोह की यह श्रृंखला बढ़ती ही जा रही है।

आदिवासी समाज की समस्याओं को समझने के लिए उनकी विचारधारा और जीवनशैली को समझना ज़रूरी है।आदिवासी समाज की अपनी अलग जीवन दृष्टि होती है।उनका अपना दर्शन ,अपनी परंपरा और व्यवस्था होती है।उनकी ज्ञान परंपरा प्रकृति से जुड़ी हुई है ।आदिवासी और गैर आदिवासी समाज में संस्कृति ,विचार,जीवन शैली भिन्नता है ।पूँजीवादी   समाज द्वारा आदिवासी समाज पर अपने विचार थोपने का प्रयास बरसों से चला आ रहा और इतिहास इसका गवाह है । आदिवासीयों का जीवन कई संघर्षों से भरा हुआ है ।जिसके लिए आदिवासी इसका विरोध कर अपने अधिकार की लड़ाई लड़ रहे हैं।

साहित्य में सम्पूर्ण समाज समाया हुआ होता है।आदिवासी समाज भी साहित्य से अछूता नहीं रहा है।साहित्य ने आदिवासियों के मुख्य प्रश्नों को समझ लिया है।जिसका समाधान निकलने और आदिवासी समस्याओं को समाज के सामने लाने का कार्य बड़े पैमाने पर हो रहा है।विश्व स्तर पर कई आदिवासी अपना बड़ा योगदान दे रहे है।

आदिवासी संघर्ष एक विमर्श के रूप में उभर कर आया है। एलिस इक्का,वंदना टेटे,रामदयाल मुंडा ,जसिंता केरकेट्टा जैसे भारत के कई साहित्यकार भी आदिवासी समस्या पर अपनी कलम चला रहे हैं।

अनुज लुगुन इक्कीसवीं सदी के प्रमुख आदिवासी युवा कवियों में से एक है।अनुज लुगुन ने अपनी कविताओं में अनेक आदिवासी प्रश्नों को उठाया है।नागरिकता,सहजीविता,प्रेम,शहरीकरण,आदिवासियों की बदलती विचारधारा ,इत्यादि विषयों को नए रूप से व्यक्त करने के कोशिश की है।उन्होंने अपनी आपबीती को व्यक्त किया है, जिसमे यथार्थ खुल कर नज़र आता हैं।

यह शोध प्रबंध कुल पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध कार्य की 'प्रस्तावना' है। इसमें सम्पूर्ण शोध कार्य का परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक 'अनुज लुगुनः सामान्य परिचय' है। इसके अंतर्गत कवि अनुज लुगुन के रचना संसार, शिक्षा, कार्य, नौकरी, पुरस्कार, काव्य दृष्टि, विचार, काव्यागत विशेषताएँ, इत्यादि सामान्य जानकारी के बारे में बताया गया है।

तृतीय अध्याय का शीर्षक 'आदिवासी : समाज एवं साहित्य' है। इसमें आदिवासी शब्द का अर्थ एवं स्वरूप, आदिवासी शब्द की परिभाषा, आदिवासियों की जीवन शैली,

101

आदिवासी साहित्य लेखन की पृष्ठ भूमि, आदिवासियों के लिए भारतीय संविधान तथा विश्व स्तर पर दिया गया स्थान, इत्यादि विषयों पर लेखन कार्य किया गया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक 'अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी प्रश्न' है। इस अध्याय के अंतर्गत अनुज लुगुन की कविताओं में चित्रित कई आदिवासी प्रश्न आए हैं, जिसमें प्रमुख रूप से नागरिकता, अस्तिव, अस्मिता, संस्कृति, पर्यावरण, मानवीय मूल्य, नक्सलवाद, असमानता, आदिवासी भाषा, राजनीति, विस्थापन, इत्यादि हैं।पंचम अध्याय का शीर्षक 'निष्कर्ष' है। इसमें शोध का निष्कर्ष और प्रमुख उपलब्धियों पर विचार किया गया है।

अनुज लुगुन की काव्य दृष्टि इतिहास और मिथक के मिश्रण से बनी हुई है। जहाँ वे मिथकों की सहायता से इतिहास के बारे में बताते हैं और पाठकों को यथार्थ से परिचित कराते हैं।उनकी कविताओं में आदिवासी पारंपरिक ज्ञान का वर्णन है,उनके इतिहास की शौर्य गाथाएँ हैं ,आदिवासियों पर होने वाले शोषण और उनकी माँग का यथार्थ परक चित्रण है।आदिवासी समाज सहजीविता पर ज्यादा बल देता है।उनका मानना है कि पर्यावरण और मानव एक दूसरे पर पूरी तरह से निर्भर हैं। वे एक दूसरे के पूरक होते हैं। इसलिए सहजीवित अत्यावश्यक है। उन्होंने आदिवासी भाषा,जल जंगल,ज़मीन,राजनीति,शोषण,श्रम,आरक्षण,आदिवासी अस्मिता तथा अस्तित्व ,संघर्ष,प्रेम,मानवता,सहजीविता, पूंजीवाद, इत्यादि विषयों को अपनी कविताओं में सम्मिलित किया हैं।उन्होंने अंग्रेज़ी ,हिंदी,मुंडारी,इत्यादि भाषाओं के शब्दों का अपनी कविताओं में उपयोग किया गया हैं।

आदिवासियों के संघर्ष ने आज आदिवासी विमर्श का रूप धारण किया है,जिसने साहित्यकारों तथा पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। साहित्य के बारे में कई

पूर्वाग्रह रूढ़ हुए हैं। साहित्य की श्रेष्ठता भी इसी परिपाटी के नज़र से देखते आ रहे है।उसी साहित्य को महान या श्रेष्ठ माना जाता है, जो पुरस्कृत हुआ हो या किसी प्रसिद्ध प्रकाशक के यहाँ से प्रकाशित हुआ हो,परन्तु जब आदिवासी साहित्य की बात आती है तो ज़रूरी है कि इस परिपाटी को छोड़कर आदिवासी साहित्य को समझा जाए। आदिवासी भाषाओं में लिखा हुआ तथा उनकी मौखिक परंपरा को आदिवासी साहित्य कहा जा सकता है। उनकी मौखिक परंपरा को वे पुरखा साहित्य कहते हैं, जिसमें कृतज्ञता का भाव, प्रकृति और प्रेम के गीत के प्रति संवेदनशीलता, शोषण की ओर जागरूकता,परंपरा तथा पर्यावरण को बचाने का भाव इत्यादि भावनाएँ होती हैं। विश्व की 80 फीसदी जैव विविधता के रक्षण में आदिवासियों की अहम भूमिका होती है। भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' शब्द का उपयोग किया है ।आदिवासियों की कुछ भाषाओं को संविधान ने सम्मीलित किया गया है।

पूँजीवादी, उपनिवेशवाद ,सहजीविता, शहरीकरण ,इत्यादि अनुज लुगुन की कविताओं के विशेष विषय बिंदु हैं।अनुज लुगुन ने इन विषयों को केंद्र में रखकर आदिवासियों पर उसका जो प्रभाव हो रहा है उसे अपनी कविताओं में व्यक्त किया हैं। उनकी कविताओं के माध्यम से आदिवासियों के कई महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने आते हैं। एक प्रश्न है –गरीबी।

गरीबी के वजह से आदिवासियों को जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।सत्ताधारी लोग उनकी उपेक्षा करते हैं।मुख्य धारा में न होने के कारण उन्हें गैर आदिवासी असभ्य, जंगली जैसे विशेषणों से पुकारते हैं। उनकी पारंपरिक ज्ञान संपदा के ज्ञान की सही जानकारी न होने के कारण लोग उन्हें दोयम दर्जा देते हैं। आदिवासी सरना धर्म को मानते है, जो आदिवासियों को इतर धर्म से अगल करती हैं।उन्हें मजबूरन हिंदू,ईसाई,इस्लाम जैसे मुख्य

धर्मों मे अपना धर्मांतरण करने के लिए कहा जाता है।उनका कहना है कि उनकी अलग पहचान है इसलिए वे किसी धर्म में परिवर्तित नहीं होना चाहते, जिसके लिए वे संघर्ष करते रहते हैं।

आदिवासियों के जीवन का मूल आधार ही जल,जंगल,और ज़मीन होता है।प्रकृति की रक्षा के लिए अपनी जान भी न्योछावर करते है।जलवायु परिवर्तन के कारण आदिवासियों की भीषण समस्या का सामना करना पडता है।पर्यावरण को बचाने में सबसे बड़ा योगदान आदिवासियों का ही होता है ,जिन्हे पारंपरिक रूप से विज्ञान,आयुर्वेद ,आदि का ज्ञान होता है।फिर भी विकास के नाम पर या मुनाफे के उद्देश्य से जंगल तथा पर्यावरण को नष्ट किया जाता है।सही योजनाओं का लाभ न मिलने के कारण वे पिछड़े रह जाते हैं।

आदिवासियों को शहर में मजदूरों का काम करना पड़ता है।उनकी समस्या के बारे में कोई नहीं सोचता ।उन्हें एक निर्जीव वस्तु की तरह इस्तमाल किया जाता है,बंधुआ मजदूर बनाया जाता है।

शिक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।आदिवासियों में शिक्षा का स्तर भी बहुत कम होता है,जिसके लिए राजनेता कोई खास कदम नहीं उठाते हैं।वे खुदके अस्तित्व की लड़ाई खुद लड़ते हैं।इतिहास की घटनाओं से पता चलता है कि, उनकी भी गैर आदिवासियों की तरह सरकार से माँगे होती हैं ,जो पूरी नही हो पातीं।

शोषण के कारण आदिवासियों का जीवन पूर्ण रूप से बदल गया है।आदिवासियों पर शहरीकरण का प्रभाव पर भी हुआ है।वे अपनी परंपरा से दूर जाते नज़र आते हैं।यह परिवर्तन तेज़ी से बढ़ रहा है ।

आदिवासियों की भाषा को भी असभ्य तथा निम्न दर्जे का माना जाता है।मुख्यधारा के लोग जिस भाषा का इस्तमाल करते ,उसे ही समाज उच्च दर्जे पर रखते हैं।आदिवासियों के भाषाओं के बारे के पहले से ही कई पूर्वाग्रह निर्माण किया हुआ है । अनुज लुगुन पाठकों को इसके बारे में भी सोचने के लिए मजबूर करते हैं।

विस्थापन का प्रश्न भी एक अहम प्रश्न है। विकास के नाम पर पर्यावरण को नष्ट किया जाता है । आदिवासियों को वहां से हटाया जाता हैं परंतु उन्हें रहने के लिए स्थान नहीं दिया जाता। विस्थापन की समस्या के कारण उन्हें बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ती हैं।

नागरिकता का प्रश्न भी कवि उठाते हैं।दुनिया के हर कोने में आदिवासी रहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे भी इस क्षेत्र के नागरिक हैं,परंतु इसके विपरित होता है।आदिवासियों को सही मायने में देश का नागरिक तक नहीं माना जाता। एक ही देश में रहकर उन्हें देश द्रोही माना जाता है।उनकी कलाओं को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता ।औपनिवेशिक शक्तियाँ, विशेषकर ब्रिटिशों के आगमन ने आदिवासी समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ताने-बाने में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया। यह प्रभाव अक्सर आदिवासी आबादी के विस्थापन, भूमि अलगाव, शोषण और जीवन के पारंपरिक तरीकों के बदलाव के ज़रिए नज़र आते हैं। साथ ही उसके कारण आदिवासियों को भूमि से बेदखल होना पडा। उनकी पारंपरिक संस्कृतियों का गंभीर विघटन हुआ।

शहरीकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।इसके कारण आदिवासी लोग शहरों के प्रभाव में आए है।'पितृसत्तात्मक विचारधारा' उन्हे संक्रमित कर रहे हैं।जिसकी वजह से आदिवासी की अपने प्रियजनों के दुश्मन होते जा रहे हैं।वे अपनी परंपरा छोड़कर गैर आदिवासियों की परंपरा

को अपना रहे हैं। विकास अनिवार्य है परंतु यदि उसकी वजह से किसी का नुकसान हो ऐसा तो विकास किसी काम का नहीं होता।विकास के नाम पर आदिवासियों का शोषण हो रहा है।उनके जीवन का मुख्य आधार जल ,जंगल और ज़मीन खत्म होते जा रहे हैं।इसलिए वे अपनी आवाज़ उठाकर अपना विरोध जाता रहे हैं। साहित्य के माध्यम से वे अपना संघर्ष व्यक्त करते हैं तथा विद्रोह भी जताते हैं।

किसी भी रचना में उनकी भाषा तथा शैली का सटीक होना ही उस रचना को प्रभावशाली बनाता है।अनुज लुगुन का काव्य संसार भी ऐसे ही प्रभावशाली ढंग से लिखा हुआ हैं।उन्होंने अपने काव्य में हिंदी के साथ साथ मुंडारी,अंग्रेजी शब्दों का उपयोग किया है।उन्होंने 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' यह लंबी कविता संवादात्मक काव्य शैली में लिखी हुई है।उनकी काव्य रचना ज्यादातर मुक्तक छंद में लिखी हुई है।जो एक कहानी की तरह प्रवाह में आगे बढ़ती जाती है।उन्होंने गद्यात्मक शैली का इस्तेमाल किया है ।काव्य में मिथक,इतिहास तथा यथार्थ भी नज़र आते है। प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने आदिवासी दृष्टि तथा उनकी समस्याओं को प्रकट करने की कोशिश की है ।

कवि ने हिंदी भाषा में मुंडारी भाषा के मिथकों,बिंबों और प्रतीकों का रचनात्मक प्रयोग किया है।कवि स्थानीय परम्परा से गुड़ी, बंदई,घोटुल, जदुर, करम, देंवड़ा, दिकु, गुन्गू, बहिंगा, दई, बुनुम जैसे शब्द चुनते हैं और कविता में इससे प्रतिरोध की वैचारिकी निर्मित करते हैं। 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' कविता में अहद सिंग, डोडे वैद्य, लुटकुम हड़म, लुटकुम बूढ़ी, सोसोबोंगा, सात जन जैसे कई मिथकीय प्रतीक हैं। इन मिथकीय प्रतीकों के जरिए कवि अपने पुरखों के विचारों के संप्रेषण की भूमिका का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, साथ में कविता में दो हिस्सों में बँट चुकी दुनिया की सभ्यता की समीक्षा भी प्रस्तुत कर रहे है। डोडो वैद्य और

उनके साथ शिष्यों के आपसी संवाद में आधुनिक सभ्यता,उसके दम्भ भरे वैज्ञानिक उपलब्धियों और व्यक्तिवादी स्वार्थपरता का सटीक शब्दों में आलोचना की गई है।कवि ने मिथक का प्रयोग लोक कथा की तरह भी किया है। आदिवासी समाज गीतों ,लोक कथाओं को जीने वाला समाज है ,जिनपर विश्वास करके वह संघर्ष के लिए तत्पर रहा है। इसलिए कविता में सुगना मुंडा और उसकी बेटी का संवाद लोक कथात्मक और मिथकीय भी हैं। कवि ने भाषा के जरिए विश्व में अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए खुद को विश्व आदिवासी समुदाय से जोड़ने का प्रयास किया है। पत्थलगड़ी इस काव्य संग्रह में उन्होंने कई समाधान भी दिखाए हैं।'हमारी सदी के लिए न्याय का मुहावरा' इस कविता में वे कहते हैं कि आखिरी समय आने से पहले ही अगर सब कुछ ठीक किया जाए ,तो सब सही हो सकता है ।अनुज लुगुन कहते हैं कि जो शरणार्थी बच्चे शिबिरों में हैं वो अगर खेलने के लिए जगह मांगें और तब उनके भविष्य के बारे में सोचना शुरू किया जाए तो वह गलत होगा। वे कहते हैं कि अगर उनके समस्याओं का हल अभी नहीं निकाला जाए ,तो नफ़रत बढ़ सकती है। जो आदिवासियों में भी फैल सकती है । आदिवासी अपने अस्तित्व के लिए लड़ते हैं, उसका रूप भी बदल सकता है। अभी भी समय है सब मिल जुल कर समानता , शांति और एकता से रहें, तो सकारात्मक बदलाव हो सकता है।इस तरह न्याय का एक नया मुहावरा तैयार हो सकता है।

अनुज लुगुन ने अपनी कविताओं में भी सहजीविताओं के बारे में ही ज़्यादा बात की है। खास तौर पर बाघ और सुगना मुंडा की बेटी कविता ' अघोषित उलगुलान ' इस काव्य संग्रह में राजनीति पर प्रखर रूप से व्यंग किया है।'गुरिल्ले का आत्मकथन' इस कविता में वे कहते है की सत्ता धारी लोगों का सार्थन पाने के लिए,लोगो के सामने बड़ी बड़ी

आदर्श से भरी बाते करते रहते हैं।परंतु पीछे से पैसों से सब खरीदते हैं। बड़ी बड़ीबड़ी लड़ाईयाँ करवाई है।

पर्यावरण भी एक महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि उनका पूर्ण जीवन जल, जंगल और ज़मीन पर ही निर्भर होता है।उसी के साथ कवि ने स्त्री दृष्टिकोण पर भी प्रकाश डाला हुआ है। आदिवासी स्त्रियाँ सदैव अपने परिवार तथा पर्यावरण की रक्षा करते रहते है।फिर भी उन्हें कई अपराधों का सामना करना पड़ता हैं। गैर आदिवासियों। द्वारा उनका शोषण किया जाता है इसलिए वे अपने अतीत और अधिकार के लिए लड़ने के लिए तत्पर रहते है।

आज की दुनिया मशीनी दुनिया है जहाँ भागदौड़ भरी जिंदगी है, पूँजीवादीं है,प्रसिद्धि पाने की लालसा है ,पाखंड है। इन सभी चीज़ों ने इनसान को अपने परिवार तथा अंतर्मन से अलग कर दिया है। आज के समय में हर व्यक्ति अपने अस्तित्व से निर्वासित है। वह जैसा है वैसा नहीं जीता। एक ढोंगीपन लेकर घूमता है, परंतु आदिवासी समाज सामूहिकता में जीता है ।वह सहजीविता को जीवन का अनिकेवार्य हिस्सा मानता है। आदिवासी समाज ने प्रकृति से खुद को नहीं तोड़ा है।उसे अपना दुश्मन नहीं माना है ,बल्कि पर्यावरण की रक्षा के लिए खुद को कुर्बान भी करने के लिए वह तैयार रह है। प्रकृति खत्म होती जा रही है ।इसी के साथ आदिवासियों की आबादी भी कम होती जा रही है और साथ–साथ उनकी विशेष पहचान भी।

गैर आदिवासी समाज में प्रकृति के प्रति जो हिंसात्मक मोह है ,उससे दूर रहने की सीख आदिवासियों से मिलती है। पूरी दुनिया में जब आदिवासी लोग विरोध करते हैं तो उनमें संघर्ष होता है। अपने अस्तित्व की लड़ाई हर कोई लड़ता है,उसी तरह आदिवासी

समाज भी अपने लिए लड़ रहा है ताकि भविष्य में पारंपरिक रूप से गैर आदिवासियों द्वारा जो अत्याचार किए जा रहे हैं उसका खात्मा हो और वे पर्यावरण के साथ खुशी से जीवन बिता सकें।

प्रपत्र प्रस्तुतिकरण तथा आलेख प्रकाशन

1)भित्तिपत्र प्रस्तुतीकरण

- 21 दिसंबर 2023 को , अहमदाबाद , गुजरात में 'भारतीय विज्ञान सम्मेलन ' का आयोजन किया गया ,जिसमे मैने 'आदिवासी कविताओं में चित्रित पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान संपदा:कवि अनुज लुगुन की कविताओं के विशेष संदर्भ में' इस विषय पर भित्तिपत्र प्रस्तुत किया।
- 16 फरवरी2024 को भित्तिपत्र प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता में भाग लिया।

2)प्रपत्र प्रस्तुतिकरण

- 'श्री बलवंत पारेख एजुकेशन ट्रस्ट',महुवा,अहमदाबाद ,गुजरात द्वारा 15 फरवरी 2024को'AN INTER NATIONAL CONFERENCE:1stMULTIDISCIPLINARY CONFERENCE ON EMERGING TRENDS IN SUSTAINABLE DEVELOPMENT' का आयोजन किया गया, जिसमे मैंने 'आदिवासी कविताओं में चित्रित पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान संपदा:कवि अनुज लुगुन की कविताओं के विशेष संदर्भ में' इस विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

3)आलेख प्रकाशन

'आदिवासी कविताओं में चित्रित पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान संपदा:कवि अनुज लुगुन की कविताओं के विशेष संदर्भ में' ,1 st International Conference on Emerging Trends in Sustainable Development (15-16 January 2024) ,organised by Shree Balvant Parekh Education Trust, Indexed Peer Reviewed Journal(ISSN: 2321-2853), International Journal Of Research In All Subject In Multi Languages(IJRSML),vol.12,sp.Issue:1, February 2024, Editor-Dr. Nilesh.B.Gajjar, published by RET Academy for International Journal of Multidisciplinary Research (RAIJMAR),pg. no.-218 to 225,sr. no.–37, paper Id. : IMCETSD -175

111

संदर्भ सूची

112

पुस्तके

- उमा शंकर चौधरी (संपादक), 'हाशिये की वैचारिकी', अनामिका पब्लिकेशन एँड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि., नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2008
- अश्विन कुमार पंकज(संपादक) 'प्राथमिक आदिवासी विमर्श' ,प्यारा केरकट्टा फाउंडेशन , राँची, झारखंड,प्रथम संस्करण– 2017
- कठेरिया कमल,'अस्मिताओं का संघर्ष',वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2015
- गुप्ता रमणिका(संपादक), 'आदिवासी साहित्य यात्रा' रमणिका फाउंडेशन, पाँचवा संस्करण– 2018
- रमणिका गुप्ता (संपादक), 'आदिवासी और नयी शताब्दी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002, द्वितीय संस्करण-2008
- रमणिका गुप्ता (संपादक), 'आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह (झारखंड)', रमणिका फाउंडेशन, नई दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण-2015
- रमणिका गुप्ता (संपादक), 'आदिवासी समाज और साहित्य', कल्याणी शिक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2015
- गुप्ता रमणिका(संपादक),आदिवासी–सृजन,मिथक एवं लोककथाएँ,प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

- जगदलपुरी लाल,वैष्णव हरिहर ,बस्तर की लोककथाएँ,प्रकाशन, नई दिल्ली-110002
- रमणिका गुप्ता (संपादक), 'विमुक्त घुमंतु आदिवासियों का मुक्ति संघर्ष', कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2015
- टेटे वंदना, ' कवि मन जनी मन – आदिवासी स्त्री कविताएँ' राधाकृष्ण पेपरबेग्स,पहला संस्करण –2019
- महाश्वेता देवी, जंगल के दावेदार,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली ,2008
- देसाई माधवी,सुंदरबन(उपन्यास),माणिक प्रकाशन ,कोल्हापुर,संस्करण–2011
- डॉ. रजत रानी 'मीनू' वंदना(संपादक) अस्मितामुलक विमर्श और हिंदी साहित्य,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,आवृत्ति–2017
- लुगुन अनुज, 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2018
- लुगुन अनुज,'पत्थलगड़ी' , वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2021
- लुगुन अनुज,'अघोषित उलगुलान' ,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण –2023
- शर्मा विशाल,कोल्हारे दत्ता,'आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति',स्वराज प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण–2016

- संतोष भारतीय (संपादक), 'दलित अल्पसंख्यक सशक्तिकरण', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2008

अंतरजाल पर उपलब्ध सामग्री

- K Arjunrao and M.Vyankateshwarao ,Tribal situation in India, Research India Press,New Delhi,2013
- J.N.Singh(editor),Trible Movement in India, Manohar publishers and distributors,New Delhi,2023

- Byomakesh Tripathy Basanta Kumar MohantaRecent Researches on the TRIBES OF CENTRAL INDIA(VOLUME 1),AAYU PUBLICATIONS, New Delhi,2016
- Chattopadhyay ,' Redefining Tribal Identity–The changing Identity of the Santhals in South – West Bengal,Primus Books, Delhi, first edition 2014.

अंतरजाल पर उपलब्ध पत्रिकाएँ

- कौशिक माधव,शर्मा कुमुद,श्रीनिवासराव के.,समकालीन भारतीय साहित्य(द्वैमासिक पत्रिका),वर्ष:43,अंक–227, मई–जून 2023
- लमही:,कवि मूल्यांकन–कविता का वर्तमान और वर्तमान की कविता,प्रधान सम्पादक–विजय राय,वर्ष:16, अंक:1, जुलाई –सितंबर2023
- नट्टाल मार्क,'आदिवासी विषयसी:जलवायु परिवर्तन और आदिवासी जन' अंक 5,अगस्त 2008,बिन्द्राय इंन्सटीट्यूट फॉर रिर्सच स्टडी एँड एक्शन्,पुरुलिया रोड राँची- 834001 (झाड़खण्ड)

अंतरजाल पर उपलब्ध शोध प्रबंध

- Ms Shreya Mrinal , Mr Sudhir Kumar,Dr Pragya Shukla,'TRANSLATING WRITINGS OF INDIGENOUS POETS OF JHARKHAND: GAINING ACCESS TO VALUABLE KNOWLEDGE SYSTEMS'Journal of Research Administration–Society of Research Administrators International,2023

- अनुज लुगुन,मुण्डारी आदिवासी गीतों में जीवन-राग और आदिम आकांक्षाएँ,(शोध प्रबंध) ,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, कला संकाय वाराणसी-221005, वर्ष: 2014
- आनन्द कुमार पटेल'आदिवासी जीवन का सांस्कृतिक पक्ष और हिंदी के उपन्यास'(शोध प्रबंध),भारतीय भाषा केंद्र (हिंदी) भाषा एवं साहित्य पीठ दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया ,बिहार,वर्ष – 2020 ई.

अंतरजाल पर उपलब्ध पुस्तके

- Abhay Flavian Xaxa G.V. Devy ,'Rethinking India: Being Adivasi-Existence , Entitlement, Exclusion'Penguin Books

अंतरजाल पर उपलब्ध यूट्यूब वीडियो सामग्री

- साहित्यतक–https://youtu.be/ZW5oNUTDl20?feature=shared
- साहित्यतक–https://youtu.be/c7hHNRJ4uR0?feature=shared
- राजकमल बुक्स-

  https://youtu.be/HKvEW9poZeo?feature=shared
- WU Live–https://youtu.be/dthqQGTafSU?feature=shared

117

- The Razar Foundation–
  https://youtu.be/lwGslGf4Buc?feature=shared
- सत्य हिंदी –https://youtu.be/-EnWAEYnkAc?feature=shared
- Unvoiced Media And Entertainment– https://youtu.be/-EnWAEYnkAc?feature=shared
- Fact Fold–https://youtu.be/IkKgnZ42WEo?feature=shared
- Vani Prakashan Group–
  https://www.youtube.com/live/HcqA39bw-qY?feature=shared
- Rati Saxena–https://youtu.be/bfHvcJ0b_P0?feature=shared
- Kolkata Literaryy Meet–
  https://youtu.be/bfHvcJ0b_P0?feature=shared
- Prabhat Khabar–https://youtu.be/AaO3ugmcp-s?feature=shared
- Bhartiya Sahitya-
  https://youtu.be/qF1ri20zRM4?feature=shared
- Vishwarang TILAF-
  https://youtu.be/qF1ri20zRM4?feature=shared
- https://youtu.be/CiquuG1F0K4?si=7JpLnxB4nzTHZj8V

- https://youtu.be/_A7Z_wm_NKU?si=icApVU7300nD2eqN
- https://youtu.be/hsexU6hk7MM?si=tdm7o9yKVPWnKlsH
- https://youtu.be/rkzCmGRr5m0?si=fOhle0l6oGl86mEd
- https://youtu.be/dthqQGTafSU?si=eJqhtcMft5OB5hGS
- https://youtu.be/Duu5B97HheI?si=dlU1gScVIBlNs1_e
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/browse?type=author&value=Lugun%2C+Anuj
- https://books.google.com/books/about/Encyclopaedia_of_Scheduled_Tribes_in_Jha.html?id=W5dVaq4_cLoC
- https://www.researchgate.net/publication/327595137_Adivasi_studies_From_a_historian's_perspective
- https://thefollowup.in/jharkhand
- https://www.gkexams.com/ask/11130-Aadiwasi-Samvidhan
- https://www.tak.live/sahitya-tak/video/the-moon-is-still-waiting-for-that-woman-anuj-lugun-sanjeev-paliwal-sahitya-tak
- https://vaniprakashan.com/author-details/2094-anuj-lugun

119

- https://www.bhaskar.com/jharkhand/gumla/news/anuj-lugun-who-created-tribal-life-in-poetry-got-yuva-sahitya-akademi-award-074505-4774391.html
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%A1%E0%A4%BE
- https://www.apnimaati.com/2021/07/blog-post_35.html
- https://www.google.com/amp/s/www.bhaskar.com/amp/jharkhand/gumla/news/anuj-lugun-who-created-tribal-life-in-poetry-got-yuva-sahitya-akademi-award-074505-4774391.html
- https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Anuj_Lugun?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
- https://vaniprakashan.com/authors
- https://www.google.com/amp/s/www.bhaskar.com/amp/jharkhand/gumla/news/anuj-lugun-who-created-tribal-life-in-poetry-got-yuva-sahitya-akademi-award-074505-4774391.html

120

- https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Anuj_Lugun?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
- https://vaniprakashan.com/authors
- https://www.forwardpress.in/2022/04/book-review-anuj-lugun-hindi/

121